किशोर भारती

कक्षा–सातवी

जम्मू कश्मीर स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल ऐजूकेशन

जम्मू एवं कश्मीर राज्य शिक्षा बोर्ड
श्रीनगर/जम्मू

© जम्मू एवं कश्मीर राज्य शिक्षा बोर्ड

- *प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रानिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।*
- *इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।*

संपादन : बशीर अहमद डार, (भूतपूर्व) शैक्षिक निदेशक, जम्मू एवं कश्मीर उच्चतर शिक्षा बोर्ड एवं नोडल अधिकारी, ई.ई.एस.एस.

आवरण एवं साज सज्जा : दि अवन्त गार्ड, 494, सै. 31, फरीदाबाद-120003 (हरियाणा)

मूल्य : रु. 25.00

प्रकाशक : सचिव, जम्मू एवं कश्मीर विद्यालय शिक्षा बोर्ड

मुद्रक : न्यू प्रिंटइंडिया प्रा. लि. 8/4बी, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट IV, साहिबाबाद-201010, गाजियाबाद

आमुख

प्रस्तुत पाठ्य पुस्तक 'किशोर भारती' कक्षा सातवीं संग्रहीत साहित्यिक सामग्री को राष्ट्रीय पाठ्य–पद्धति 2005 के अनुसार विकसित किया गया है। प्रस्तुत पाठ्य पुस्तक की रूप रेखा बच्चों को स्कूली जीवन के अतिरिक्त सामाजिक जीवन से भी जोड़ने पर बल देती है ताकि बच्चे के व्यक्तित्व का सामूहिक विकास हो सके। प्रस्तुत सामग्री के द्वारा बच्चों के अन्दर परम्परा से चले आ रहे घर तथा स्कूल, समाज तथा स्कूल अथवा व्यवहार एवम् पुस्तकीय ज्ञान के मध्य बने हुए अन्तराल को समाप्त करने का प्रयास किया गया है। नवीन पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम तथा पाठ्य पुस्तकों में इस मौलिक विचार को क्रियान्वित रूप से लाने का प्रयास है। इस प्रयास में प्रत्येक विषय को एक निश्चित तथा सीमित परिधि में देने का विरोध सम्मिलित है तथा किसी भी विषय विशेष को रटा देने की अपेक्षा बोध गम्यता पर अधिक बल दिया गया है। अब इस प्रयास की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि स्कूलों के शिक्षक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों तथा प्रश्नों की सहायता से सीखने–सिखाने के दौरान अपने अनुभव पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। प्रस्तुत सामग्री के द्वारा बच्चों के अन्दर चिंतन शीलता तथा सृजनात्मकता की ओर विकासोन्मुख करने का प्रयास किया गया है। सृजनात्मकता की प्रवृत्ति को विकसित करने के लिये यह आवश्यक है कि बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूर्णतया स्वतंत्रता दी जाए तथा उन्हें निश्चित एवम् निर्धारित पारम्परिक गतिविधियों से स्वतंत्र कर दें।

मूल्यांकन द्वारा यह तथ्य पूर्णतया स्पष्ट हो जाएगा कि प्रस्तुत पाठ्य पुस्तक स्कूल में छात्रों के शैक्षिक जीवन को मानसिक दबाव तथा तनाव के स्थान पर शैथिल्य का साम्राज्य लाने में कितनी प्रभावी एवम् महायक सिद्ध हो सकती है। बोझ

की समस्या से निपटने के लिये पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में सामग्री का निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवम् अध्ययापन के लिये उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। जे० एण्ड के० स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल ऐजूकेशन प्रस्तुत पुस्तक की रचना के लिये आमंत्रित किए गए प्रयोगशाला के सदस्यों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता है।

डॉ० शेख बशीर अहमद

चेयरमैन :

जम्मू कश्मीर स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल एज़ूकेशन

आभार

प्रस्तुत पुस्तक "किशोर भारती" कक्षा सातवीं को राष्ट्रीय पाठ्यक्रम पद्धति–2005 के अनुसार विकसित एवं निर्मित करने के लिये सी.डी.आर. विंड. द्वारा आयोजित प्रयोगशाला को सफल एवम् सार्थक बनाने के लिये प्रयोगशाला में आमंत्रित विद्वानों एवम् विषय विशेषज्ञों का अनुपम योगदान रहा जिन्होंने प्रयोगशाला में अपने अनुभवों तथा अनथक बौद्धिक प्रयासों द्वारा छात्रों की कक्षा के स्तरानुसार यथोचित पाठ्य सामग्री को नव निर्मित पुस्तक में सम्मिलित करते हुए प्रस्तुत पाठ्य–पुस्तक निर्माण के पवित्र कार्य को समपन्न किया। पुस्तक निर्माण हेतु आयोजित कार्यशाला को अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँचाने के लिये निम्नलिखित विद्वानों का योगदान रहा :–

1. श्री केवल कृष्ण शर्मा : प्राध्यापक गवर्नमैंट हायर सैकंडरी स्कूल मुबारक मंडी, जम्मू।
2. डॉ बंसी लाल शर्मा : प्राध्यापक डायरैक्टर स्कूल ऑफ ऐजूकेशन।
3. श्रीमती कांता शर्मा : प्राध्यापक गवर्नमैंट हायर सैकंडरी स्कूल मुबारक मंड़ी जम्मू।
4. श्री श्याम लाल शर्मा : प्राध्यापक हिन्दी।
5. श्रीमती शक्ति शर्मा : अध्यापक गर्वनमैंट मिडिल स्कूल रिहाड़ी जम्मू।

विषय के मर्मज्ञ उपुर्यक्त विद्वानों के अतिरिक्त सी० डी० आर० विंग० के जिन अधिकारियों का अतिरिक्त सहयोग रहा वे इस प्रकार हैं :–

1. सुषमा वर्मा : डिप्टी डायरैक्टर अकैडमिक।
2. **डॉ० यासिर हारिम सिरवाल : शैक्षिक पदाधिकारी।**

प्रस्तुत पुस्तक की निर्माण एवम् विकास प्रक्रिया के अतिरिक्त पाठ्य सामग्री को कम्प्यूटर द्वारा लिपिबृद्ध करके पुस्तकीयरूप में प्रस्तुत करने के लिये श्री मुकेश रकवाल जी और पब्लिकैशन विंग० के प्रति भी हम अपना आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने अपने अनथक परिश्रम द्वारा पुस्तक निर्माताओं, विशेषज्ञों तथा सी.डी.आर. विंग के अधिकारियों के इस प्रयास को सफल एवमं सार्थक बनाया।

डॉ० एम० एस० बलोरिया
सैक्ट्री
जम्मू कश्मीर स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल ऐजूकेशन

पाठ–सूची

1.	हम पंछी उन्मुक्त गगन के	1–3
2.	हिमालय की बेटियाँ	4–9
3.	मिठाईवाला	10–19
4.	पापा खो गए	20–39
5.	शाम–एक किसान	40–43
6.	रहीम के दोहे	44–45
7.	एक तिनका	46–49
8.	नीलकंठ	50–60
9.	भोर और बरखा	61–63
10.	और भी दूँ	64–65
11.	जम्मू–कश्मीर की झीलें	66–70
12.	दाता रणपत	71–75
13.	दोहा एकादश	76–78
14.	लदाख का विवाह–उत्सव	79–82
15.	पुंछ और राजौरी के प्रसिद्ध तीर्थस्थान	83–88
16.	स्वामी अमरनाथ की यात्रा	89–94
17.	हिमालय और हम	95–97

हम पंछी उन्मुक्त गगन के

हम पंछी उन्मुक्त गगन के
पिंजरबद्ध न गा पाएँगे,
कनक–तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएँगे।

हम बहता जल पीनेवाले
मर जाएँगे भूखे–प्यासे,
कहीं भली है कटुक निबौरी
कनक–कटोरी की मैदा से।

स्वर्ण–श्रृंखला के बंधन में
अपनी गति, उड़ान सब भूले,
बस सपनों में देख रहे हैं
तरु की फुनगी पर के झूले।

ऐसे थे अरमान कि उड़ते
नीले नभ की सीमा पाने,
लाल किरण–सी चोंच खोल
चुगते तारक–अनार के दाने।

होती सीमाहीन क्षितिज से
इन पंखों की होड़ा–होड़ी,
या तो क्षितिज मिलन बन जाता
या तनती साँसों की डोरी।

नीड़ न दो, चाहे टहनी का
आश्रय छिन्न–भिन्न कर डालो,
लेकिन पंख दिए हैं तो
आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।

– शिवमंगल सिंह 'सुमन'

प्रश्न –अभ्यास

कविता से

1. हर तरह की सुख सुविधाएँ पकर भी पक्षी पिंजरे में बंद क्यों नहीं रहना चाहते ?
2. पक्षी उन्मुक्त रहकर अपनी कौन–कौन सी इच्छाएँ पूरी करना चाहते है ?
3. भाव स्पष्ट कीजिए –

या तो क्षितिज मिलन बन जाता / या तनती साँसों की डोरी।

कविता से आगे

1. बहुत से लोग पक्षी पालते हैं –

(क) पक्षियों को पालना उचित है अथवा नहीं ? अपने विचार लिखिए।

(ख) क्या आपने या आपकी जानकारी में किसी ने कभी कोई पक्षी पाला है उसकी देखरेख किस प्रकार की जाती होगी, लिखिए।

2. पक्षियों को पिंजरे में बंद करने से केवल उनकी आज़ादी का हनन ही नहीं होता, अपितु पर्यावरण भी प्रभावित होता है। इस विषय पर दस पंक्तियों में अपने विचार लिखिए।

अनुमान और कल्पना

1. क्या आपको लगता है कि मानव की वर्तमान जीवन–शैली और शहरीकरण से जुड़ी योजनाएँ पक्षियों के लिए घातक हैं ? पक्षियों से रहित वातावरण में अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। इन समस्याओं से बचने के लिए हमें क्या करना चाहिए ? उक्त विषय पर वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए।
2. यदि आपके घर के किसी स्थान पर किसी पक्षी ने अपना आवास बनाया है और किसी कारणवश आपको अपना घर बदलना पड़ रहा है तो आप उस पक्षी के लिए किस तरह के प्रबंध करना आवश्यक समझेंगे ? लिखिए ।

भाषा की बात

1. स्वर्ण–शृंखला और लाल किरण–सी में रेखांकित शब्द गुणवाचक विशेषण हैं। कविता से ढूँढकर इस प्रकार के तीन और उदाहरण लिखिए।
2. 'भूखे–प्यासे' में द्वंद्व समास है। इन दोनों शब्दों के बीच लगे चिह्नको सामासिक चिह्न (–) कहते हैं। इस चिह्न से 'और' का संकेत मिलता है, जैसे – भूखे–प्यासे : भूखे और प्यासे।

इस प्रकार के दस अन्य उदाहरण खोजकर लिखिए।

हिमालय की बेटियाँ

अभी तक मैंने उन्हें दूर से देखा था। बड़ी गंभीर, शांत, अपने में खोई हुई लगती थीं। संभ्रांत महिला की भाँति वे प्रतीत होती थीं। उनके प्रति मेरे दिल में आदर और श्रद्धा के भाव थे। माँ और दादी, मौसी और मामी की गोद की तरह उनकी धारा में डुबकियाँ लगाया करता।

परंतु इस बार जब मैं हिमालय के कंधे पर चढ़ा तो वे कुछ और रूप में सामने थीं। मैं हैरान था कि यही दुबली–पतली गंगा, यही यमुना, यही सतलुज समतल मैदानों में उतरकर विशाल कैसे हो जाती हैं! इनका उछलना और कूदना खिलखिलाकर लगातार हँसते जाना, इनकी यह भाव–भंगी, इनका यह उल्लास कहाँ गायब हो जाता है मैदान में जाकर? किसी लड़की को जब मैं देखता हूँ, किसी कली पर जब मेरा ध्यान अटक जाता है, तब भी इतना कौतूहल और विस्मय नहीं होता, जितना कि इन बेटियों की बाललीला देखकर!

कहाँ ये भागी जा रही हैं? वह कौन लक्ष्य है जिसने इन्हें बेचैन कर रखा है? अपने महान पिता का विराट प्रेम पाकर भी अगर इनका हृदय अतृप्त ही है तो वह कौन होगा जो इनकी प्यास मिटा सकेगा! बरफ जली नंगी पहाड़ियाँ, छोटे–छोटे पौधों से भरी घाटियाँ, बंधुर अधित्यकाएँ, सरसब्ज़ उपत्यकाएँ–ऐसा है इनका लीला निकेतन! खेलते–खेलते जब ये ज़रा दूर निकल जाती हैं तो देवदार, चीड़, सरो, चिनार, सफेदा, कैल के जंगलों में पहुँचकर शायद इन्हें बीती बातें याद करने का मौका मिल जाता होगा। कौन जाने, बुड्ढा हिमालय अपनी इन नटखट बेटियों के लिए कितना सिर धुनता होगा! बड़ी–बड़ी चोटियों से जाकर पूछिए तो उत्तर में विराट मौन के सिवाय उनके पास और रखा ही क्या है ?

सिंधु और ब्रह्मपुत्र–ये दो ऐसे नाम हैं जिनके सुनते ही रावी, सतलुज, व्यास चनाब, झेलम, काबुल (कुभा), कपिशा, गंगा, यमुना, सरयू, गंडक, कोसी आदि हिमालय की छोटी–बड़ी सभी बेटियाँ आँखों के सामने नाचने लगती हैं। वास्तव में सिंधु और ब्रह्मपुत्र स्वयं कुछ नहीं हैं। दयालु हिमालय के पिघले हुए दिल की एक–एक बूँद न जाने कब से इकट्ठा हो–होकर इन दो महानदों के रूप में समुद्र की ओर प्रवाहित होती रही है। कितना सौभाग्यशाली है वह समुद्र जिसे पर्वतराज हिमालय की इन दो बेटियों का हाथ पकड़ने का श्रेय मिला!

जिन्होंने मैदानों में ही इन नदियों को देखा होगा, उनके खयाल मे शायद ही यह बात आ सके कि बूढ़े हिमालय की गोद में बच्चियाँ बनकर ये कैसे खेला करती हैं। माँ–बाप की गोद में नंग–धड़ंग होकर खेलनेवाली इन बालिकाओं का रूप पहाड़ी आदमियों के लिए आकर्षक भले न हो, लेकिन मुझे तो ऐसा लुभावना प्रतीत हुआ वह रूप कि हिमालय को ससुर और समुद्र को उसका दामाद कहने में कुछ भी झिझक नहीं होती है।

कालिदास के विरही यक्ष ने अपने मेघदूत से कहा था–वेत्रवती (बेतवा) नदी को प्रेम का प्रतिदान देते जाना, तुम्हारी वह प्रेयसी तुम्हें पाकर अवश्य ही प्रसन्न होगी। यह बात इन चंचल नदियों को देखकर मुझे अचानक याद आ गई और सोचा कि शायद उस महाकवि को भी नदियों का सचेतन रूपक पसंद था। दरअसल जो भी कोई नदियों को पहाड़ी घाटियों और समतल आँगनों के मैदानों में जुदा–जुदा शक्लों में देखेगा, वह इसी नतीजे पर पहुँचेगा।

काका कालेलकर ने नदियों को लोकमाता कहा है। किंतु माता बनने से पहले यदि हम इन्हें बेटियों के रूप में देख लें तो क्या हर्ज है? और थोड़ा आगे चलिए... इन्हीं में अगर हम प्रेयसी की भावना करें तो कैसे रहेगा? ममता का एक और भी धागा है, जिसे हम इनके साथ जोड़ सकते हैं। बहन का स्थान कितने कवियों ने इन नदियों

को दिया है। एक दिन मेरी भी ऐसी भावना हुई थी। थो–लिङ् (तिब्बत) की बात है। मन उचट गया था, तबीयत ढीली थी। सतलुज के किनारे जाकर बैठ गया। दोपहर का समय था। पैर लटका दिए पानी में। थोड़ी ही देर में उस प्रगतिशील जल ने असर डाला। तन और मन ताज़ा हो गया तो लगा मैं गुनगुनाने–

जय हो सतलज बहन तुम्हारी
लीला अचरज बहन तुम्हारी
हुआ मुदित मन हटा खुमारी
जाऊँ मैं तुम पर बलिहारी
तुम बेटी यह बाप हिमालय
चिंतित पर, चुपचाप हिमालय
प्रकृति नटी के चित्रित पट पर
अनुपम अद्‌भुत छाप हिमालय
जय हो सतलुज बहन तुम्हारी!

प्रश्न–अभ्यास

लेख से

1. नदियों को माँ मानने की परंपरा हमारे यहाँ काफी पुरानी है। लेकिन लेखक नागार्जुन उन्हें और किस रूपों में देखते हैं ?
2. सिंधु और ब्रह्मपुत्र की क्या विशेषताएँ बताई गई हैं ?
3. काका कालेलकर ने नदियों को लोकमाता क्यों कहा है ?
4. हिमालय की यात्रा में लेखक ने किन–किन की प्रशंसा की है ?

लेख से आगे

1. नदियों और हिमालय पर अनेक कवियों ने कविताएँ लिखी हैं। उन कविताओं का चयन कर उनकी तुलना पाठ में निहित नदियों के वर्णन से कीजिए।
2. गोपालसिंह नेपाली की कविता 'हिमालय और हम', रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता 'हिमालय' तथा जयशंकर प्रसाद की कविता 'हिमालय के आँगन में' पढ़िए और तुलना कीजिए।
3. यह लेख 1947 में लिखा गया था। तब से हिमालय से निकलनेवाली नदियों में क्या–क्या बदलाव आए हैं ?
4. अपने संस्कृत शिक्षक से पूछिए कि कालिदास ने हिमालय को देवात्मा क्यों कहा है?

अनुमान और कल्पना

1. लेखक ने हिमालय से निकलनेवाली नदियों को ममता भरी आँखों से देखते हुए उन्हें हिमालय की बेटियाँ कहा है। आप उन्हें क्या कहना चाहेंगे ? नदियों की सुरक्षा के लिए कौन–कौन से कार्य हो रहे हैं ? जानकारी प्राप्त करें और अपना सुझाव दें।
2. नदियों से होनेवाले लाभों के विषय में चर्चा कीजिए और इस विषय पर बीस पंक्तियों का एक निबंध लिखिए।

भाषा की बात

1. अपनी बात कहते हुए लेखक ने अनेक समानताएँ प्रस्तुत की हैं। ऐसी तुलना से अर्थ अधिक स्पष्ट एवं सुंदर बन जाता है। उदाहरण –

   (क) संभ्रांत महिला की भाँति वे प्रतीत होती थीं।

(ख) मा और दादी, मौसी और मामी की गोद की तरह उनकी धारा में डुबकियाँ लगाया करता।

अन्य पाठों से ऐसे पाँच तुलनात्मक प्रयोग निकालकर कक्षा में सुनाइए और उन सुंदर प्रयोगों को कॉपी में भी लिखिए।

2. निर्जीव वस्तुओं को मानव–संबंधी नाम देने से निर्जीव वस्तुए भी मानो जीवित हो उठती हैं। लेखक ने इस पाठ में कई स्थानों पर ऐसे प्रयोग किए है, जैसे–

(क) परंतु इस बार जब मैं हिमालय के कंधे पर चढ़ा तो वे कुछ और रूप में सामने थीं।

(ख) काका कालेलकर ने नदियों को लोकमाता कहा है।

– पाठ से इसी तरह के और उदाहरण ढूँढ़िए।

3. पिछली कक्षा में आप विशेषण और उसके भेदों से परिचय प्राप्त कर चुके हैं। नीचे दिए गए विशेषण और विशेष्य (संज्ञा) का मिलान कीजिए –

विशेषण	विशेष्य
संभ्रांत	वर्षा
चंचल	जंगल
समतल	महिला
घना	नदियाँ
मूसलधार	आँगन

4. द्वंद्व समास के दोनों पद प्रधान होते हैं। इस समास में 'और' शब्द का लोप हो जाता है, जैसे–राजा–रानी द्वंद्व समास है जिसका अर्थ है राजा और रानी। पाठ में कई स्थानों पर द्वंद्व समासों का प्रयोग किया गया है। इन्हें खोजकर वर्णमाला क्रम (शब्दकोश–शैली) में लिखिए।

5. नदी को उल्टा लिखने से दीन होता है जिसका अर्थ होता है गरीब। आप भी पाँच

ऐसे शब्द लिखिए जिसे उल्टा लिखने पर सार्थक शब्द बन जाए। प्रत्येक शब्द के आगे संज्ञा का नाम भी लिखिए, जैसे–नदी–दीन (भाववाचक संज्ञा)।

6. समय के साथ भाषा बदलती है, शब्द बदलते हैं और उनके रूप बदलते हैं, जैसे–बेतवा नदी के नाम का दूसरा रूप 'वेत्रवती' है। नीचे दिए गए शब्दों में से ढूँढकर इन नामों के अन्य रूप लिखिए –

सतलुज	रोपड़	विपाशा	वितस्ता
झेलम	चिनाब	रूपपुर	शतद्रुम
अजमेर	बनारस	अजयमेरु	वाराणसी

7. 'उनके ख्याल में शायद ही यह बात आ सके कि बूढ़े हिमालय की गोद में बच्चियाँ बनकर ये कैसे खेला करती हैं।'

उपर्युक्त पंक्ति में 'ही' के प्रयोग की ओर ध्यान दीजिए। 'ही' वाला वाक्य नकारात्मक अर्थ दे रहा है। इसीलिए 'ही' वाले वाक्य में कही गई बात को हम ऐसे भी कह सकते हैं – उनके ख्याल में शायद यह बात न आ सके।

इसी प्रकार नकारात्मक प्रश्नवाचक वाक्य कई बार 'नहीं' के अर्थ में इस्तेमाल नहीं होते हैं, जैसे– महात्मा गांधी को कौन नहीं जानता ? दोनों प्रकार के वाक्यों के समान तीन–तीन उदाहरण सोचिए और इस दृष्टि से उनका विश्लेषण कीजिए।

मिठाईवाला

बहुत ही मीठे स्वरों के साथ वह गलियों में घूमता हुआ कहता "बच्चों को बहलानेवाला, खिलौनेवाला"।

इस अधूरे वाक्य को वह ऐसे विचित्र, किंतु मादक–मधुर ढंग से गाकर कहता कि सुनने वाले एक बार अस्थिर हो उठते। उसके स्नेहाभिषिक्त कंठ से फूटा हुआ गान सुनकर निकट के मकानों में हलचल मच जाती। छोटे–छोटे बच्चों को अपनी गोद में लिए युवतियाँ चिकों को उठाकर छज्जों पर नीचें झाँकने लगतीं। गलियों और उनके अंतर्व्यापी छोटे–छोटे उद्यानों में खेलते और इठलाते हुए बच्चों का झुंड उसे घेर लेता और तब वह खिलौनेवाला वहीं बैठकर खिलौने की पेटी खेल देता।

बच्चे खिलौने देखकर पुलकित हो उठते। वे पैसे लाकर खिलौने का मोलभाव करने लगते। पूछते– "इछका दाम क्या है? औल इछका? और इछका?" खिलौनेवाला बच्चों को देखता और उनकी नन्हीं–नन्हीं उँगलियों से पैसे ले लेता और बच्चों की इच्छानुसार उन्हें खिलौने दे देता। खिलौने लेकर फिर कहता – "बच्चों को बहलानेवाला, खिलौनेवाला"। सागर की हिलोर की भाँति उसका यह मादक गान गलीभर के मकानों में इस ओर से उस ओर तक लहराता हुआ पहुँचता और खिलौनेवाला आगे बढ़ जाता।

राय विजयबहादुर के बच्चे भी एक दिन खिलौने लेकर घर आए। वे दो बच्चे थे – चुन्नू और मुन्नू! चुन्नू जब खिलौने ले आया तो बोला– "मेला घोला कैछा छुंदल ऐ!"

मुन्नू बोला – "औल देखो, मेला कैछा छुंदल ऐ!"

दोनों अपने हाथी–घोड़े लेकर घरभर में उछलने लगे। इन बच्चों की माँ

रोहिणी कुछ देर तक खेड़े–खड़े उनका खेल निरखती रही। अंत में दोनों बच्चों को बुलाकर उसने पूछा – "अरे ओ चुन्नू–मुन्नू, ये खिलौने तुमने कितने में लिए हैं ?"

मुन्नू बोला – "दो पैछे में। खिलौनेवाला दे गया ऐ।"

रोहिणी सोचने लगी– इतने सस्ते कैसे दे गया है ? कैसे दे गया है, यह तो वही जाने। लेकिन दे तो गया ही है, इतना तो निश्चय है!

एक ज़रा बात ठहरी। रोहिणी अपने काम में लग गई। फिर कभी उसे इस पर विचार करने की आवश्यकता भी भला क्यों पड़ती

2

छह महीने बाद –

नगरभर में दो–चार दिनों से एक मुरलीवाले के आने का समाचार फैल गया। लोग कहने लगे– "भाई वाह! मुरली बजाने में वह एक ही उस्ताद है। मुरली बजाकर, गाना सुनाकर वह मुरली बेचता भी है, सो भी दो–दो पैसे में। भला, इसमें उसे क्या मिलता होगा ? मेहनत भी तो न आती होगी!"

एक व्यक्ति ने पूछ लिया– "कैसा है वह मुरलीवाला, मैंने तो उसे नहीं देखा!" उत्तर मिला– "उम्र तो उसकी अभी अधिक न होगी, यही तीस–बत्तीस का होगा। दुबला–पतला गोरा युवक है, बीकानेरी रंगीन साफा बाँधता है।"

"वही तो नहीं; जो पहले खिलौने बेचा करता था?"

"क्या वह पहले खिलौने भी बेचा करता था?"

"हाँ, जो आकार–प्रकार तुमने बतलाया, उसी प्रकार का वह भी था।"

"तो वही होगा। पर भई, है वह एक उस्ताद।"

प्रतिदिन इसी प्रकार उस मुरलीवाले की चर्चा होती। प्रतिदिन नगर की प्रत्येक गली में उसका मादक, मृदुल स्वर सुनाई पड़ता– "बच्चों को बहलानेवाला मुरलीवाला।"

रोहिणी ने भी मुरलीवाले का यह स्वर सुना। तुरंत ही उसे खिलौनेवाले का स्मरण हो आया। उसने मन–ही–मन कहा – खिलौनेवाला भी इसी तरह गा–गाकर खिलौने बेचा करता था।

रोहिणी उठकर अपने पति विजय बाबू के पास गई–"ज़रा उस मुरलीवाले को बुलाओ तो, चुन्नू–मुन्नू के लिए ले लूँ। क्या पता यह फिर इधर आए, न आए। वे भी, जान पड़ता है, पार्क में खेलने निकल गए हैं।"

विजय बाबू एक समाचार–पत्र पढ़ रहे थे। उसी तरह उसे लिए हुए वे दरवाज़े पर आकर मुरलीवाले से बोले– "क्यों भई, किस तरह देते हो मुरली?"

किसी की टोपी गली में गिर पड़ी। किसी का जूता पार्क में ही छूट गया, और किसी की सोथनी (पाजामा) ही ढीली होकर लटक आई है। इस तरह दौड़ते–हाँफते हुए बच्चों का झुंड आ पहुँचा। एक स्वर से सब बोल उठे– "आम बी लेंदे मुल्ली और अम वी लेंदे मुल्ली।"

मुरलीवाला हर्ष–गद्‌गद हो उठा। बोला–"सबको देंगे भैया! लेकिन ज़रा रुको, ठहरो, एक–एक को देने दो। अभी इतनी जल्दी हम कहीं लौट थोड़े ही जाएँगे। बेचने तो आए ही हैं और हैं भी इस समय मेरे पास एक–दो नहीं, पूरी सत्तावन। ...हाँ, बाबू जी, क्या पूछा था आपने, कितने में दीं! .... दीं तो वैसे तीन–तीन पैसे के हिसाब से हैं, पर आपको दो–दो पैसे में ही दे दूँगा।"

विजय बाबू भीतर–बाहर दोनों रूपों में मुसकरा दिए। मन–ही–मन कहने लगे – कैसा है! देता तो सबको इसी भाव है, पर मुझ पर उल्टा एहसान लाद रहा है। फिर बोले– "तुम लोगों की झूठ बोलने की आदत होती है। देते होगे सभी को दो–दो पैसे में, पर एहसान का बोझा मेरे ही ऊपर लाद रहे हो।"

मुरलीवाला एकदम अप्रतिभ हो उठा। बोला– "आपको क्या पता बाबू जी कि इनकी असली लागत क्या है! यह तो ग्रहाकों का दस्तूर होता है कि दुकानदार चाहे

हानि उठाकर चीज़ क्यों न बेचे, पर ग्राहक यही समझते हैं–दुकानदार मुझे लूट रहा है। आप भला काहे को विश्वास करेंगे? लेकिन सच पूछिए तो बाबू जी, असली दाम दो ही पैसा है। आप कहीं से दो पैसे में ये मुरली नहीं पा सकते। मैंने तो पूरी एक हज़ार बनवाई थीं, तब मुझे इस भाव पड़ी हैं।"

विजय बाबू बोले– "अच्छा, मुझे ज़्यादा वक्त नहीं, जल्दी से दो निकाल दो।"

दो मुरलियाँ लेकर विजय बाबू फिर मकान के भीतर पहुँच गए। मुरलीवाला देर तक उन बच्चों के झुंड में मुरलियाँ बेचता रहा! उसके पास कई रंग की मुरलियाँ थीं। बच्चे जो रंग पसंद करते, मुरलीवाला उसी रंग की मुरली निकाल देता।

"यह बड़ी अच्छी मुरली है। तुम यही ले लो बाबू, राजा बाबू तुम्हारे लायक तो बस यह है। हाँ भैये, तुमको वही देंगे। ये लो। .... तुमको वैसी न चाहिए, यह नारंगी रंग की, अच्छा वहीं लो। .... ले आए पैसे? अच्छा, ये लो तुम्हारे लिए मैंने पहले ही से यह निकाल रखी थी....! तुमको पैसे नहीं मिले। तुमने अम्मा से ठीक तरह माँगे न होंगे। धोती पकड़कर पैरों में लिपटकर, अम्मा से पैसे माँगे जाते बाबू हाँ, फिर जाओ। अबकी बार मिल जाएँगे.... । दुअन्नी है? तो क्या हुआ, ये लो पैसे वापस लो। ठीक हो गया न हिसाब? .... मिल गए पैसे? देखो, मैंने तरकीब बताई! अच्छा अब तो किसी को नहीं लेना है? सब ले चुके? तुम्हारी माँ के पास पैसे नहीं हैं? अच्छा, तुम भी यह लो। अच्छा, तो अब मैं चलता हूँ।" इस तरह मुरलीवाला फिर आगे बढ़ गया।

3

आज अपने मकान में बैठी हुई रोहिणी मुरलीवाले की सारे बातें सुनती रही। आज भी उसने अनुभव किय, बच्चों के साथ इतने प्यार से बातें करनेवाले फेरीवाला पहले कभी नहीं आया। फिर वह सौदा भी कैसा सस्ता बेचता है! भला आदमी जान पड़ता है। समय की बात है, जो बेचारा इस तरह मारा–मारा फिरता है। पेट जो न कराए, सो

थोड़ा!

इसी समय मुरलीवाले का क्षीण स्वर दूसरी निकट की गली से सुनाई पड़ा– "बच्चों को बहालानेवाला, मुरलियावाला!"

रोहिणी इसे सुनकर मन–ही–मन कहने लगी–और स्वर कैसा मीठा है इसका बहुत दिनों तक रोहिणी को मुरलीवाले का वह मीठा स्वर और उसकी बच्चों के प्रति वे स्नेहभिसिक्त बातें याद आती रहीं। महीने–के–महीने आए और चले गए। फिर मुरलीवाला न आया। धीरे–धीरे उसकी स्मृति भी क्षीण हो गई।

4

आठ मास बाद–

सरदी के दिन थे। रोहिणी स्नान करके मकान की छत पर चढ़कर आजानुलंबित केश–राशि सुखा रही थी। इस समय नीचे की गली में सुनाई पड़ा– "बच्चों को बहलानेवाला, मिठाईवाला।" मिठाईवाले का स्वर उसके लिए परिचित था, झट से रोहिणी नीचे उतर आई। उस समय उसके पति मकान में नहीं थे। हाँ, उनकी वृद्धा दादी थीं। रोहिणी उनके निकट आकर बोली– "दादी, चुन्नू–मुन्नू के लिए मिठाई लेनी है। ज़रा कमरे में चलकर ठहराओ। मैं उधर कैसे जाऊँ, कोई आता न हो। ज़रा हटकर मैं भी चिक की ओट में बैठी रहूँगी।"

दादी उठकर कमरे में आकर बोलीं– "ए मिठाईवाले, इधर आना।"

मिठाईवाला निकट आ गया। बोला–"कितनी मिठाई दूँ माँ? ये नए तरह की मिठाइयाँ हैं– रंग–बिरंगी, कुछ–कुछ खट्टी, कुछ–कुछ मीठी, ज़ायकेदार, बड़ी देर तक मुँह में टिकती हैं। जल्दी नहीं घुलतीं। बच्चे बड़े चाव से चूसते हैं। इन गुणों के सिवा ये खाँसी भी दूर करती हैं! कितनी दूँ? चपटी, गोल, पहलदार गोलियाँ हैं। पैसे की सोलह देता हूँ।"

दादी बोलीं–"सोलह तो बहुत कम होती हैं, भला पचीस तो देते।"

मिठाईवाला–" नहीं दादी, अधिक नहीं दे सकता। इतना भी देता हूँ, यह अब मैं तुम्हें क्या... खैर, मैं अधिक न दे सकूँगा।"

रोहिणी दादी के पास ही थी। बोली–"दादी, फिर भी काफी सस्ता दे रहा है। चार पैसे की ले लो। यह पैसे रहे।"

मिठाईवाला मिठाइयाँ गिनने लगा। "तो चार की दे दो। अच्छा, पच्चीस नहीं सहीं, बीस ही दो। अरे हाँ, मैं बूढ़ी हुई मोलभाव अब मुझे ज़्यादा करना आता भी नहीं।"

कहते हुए दादी के पोपले मुँह से ज़रा सी मुसकराहट फूट निकली।

रोहिणी ने दादी से कहा– "दादी, इससे पूछो, तुम इस शहर में और कभी भी आए थे या पहली बार आए हो? यहाँ के निवासी तो तुम हो नहीं।

दादी ने इस कथन को दोहराने की चेष्टा की ही थी कि मिठाईवाले ने उत्तर दिया–"पहली बार नहीं और भी कई बार आ चुका हूँ।"

रोहिणी चिक की आड़ ही से बोली–"पहले यही मिठाई बेचते हुए आए थे या और कोई चीज़ लेकर?"

मिठाईवाला हर्ष, संशय और विस्मयादि भावों में डूबकर बोला–"इससे पहले मुरली लेकर आया था और उससे भी पहले खिलौने लेकर।"

रोहिणी का अनुमान ठीक निकला। अब तो वह उससे और भी कुछ बाते पूछने के लिए अस्थिर हो उठी। वह बोली– "इन व्यवसायों में भला तुम्हें क्या मिलता होगा?"

वह बोला, "मिलता भला क्या है यही खाने को मिल जाता है। कभी नहीं भी मिलता है। पर हाँ; संतोष, धीरज और कभी–कभी असीम सुख ज़रूर मिलता है और यही मैं चाहता भी हूँ।"

"सो कैसे? वह भी बताओ।" "अब व्यर्थ उन बातों की क्यों चर्चा करूँ? उन्हें

आप जाने ही दें। उन बातों को सुनकर आपको दुख ही होगा।" "जब इतना बताया है, तब और भी बता दो। मैं बहुत उत्सुक हूँ। तुम्हारा हरजा न होगा। मिठाई मैं और भी ले लूँगी।" अतिशय गंभीरता के साथ मिठाईवाले ने कहा– "मैं भी अपने नगर का एक प्रतिष्ठित आदमी था। मकान, व्यवसाय, गाड़ी–घोड़े, नौकर–चाकर सभी कुछ था। स्त्री थी, छोटे–छोटे दो बच्चे भी थे। मेरा वह सोने का संसार था। बाहर संपत्ति का वैभव था, भीतर सांसारिक सुख था। स्त्री सुंदरी थी, मेरी प्राण थी। बच्चे ऐसे सुंदर थे, जैसे सोने के सजीव खिलौने। उनकी अठखेलियों के मारे घर में कोलाहल मचा रहता था। समय की गति! विधाता की लीला। अब कोई नहीं है। दादी, प्राण निकाले नहीं निकले। इसलिए अपने उन बच्चों की खोज में निकला हूँ। वे सब अंत में होंगे, तो यहीं कहीं। आखिर, कहीं न कहीं जन्में ही होंगे। उस तरह रहता, घुल–घुलकर मरता। इस तरह सुख–संतोष के साथ मरूँगा। इस तरह के जीवन में कभी–कभी अपने उन बच्चों की एक झलक–सी मिल जाती है। ऐसा जान पड़ता है, जैसे वे इन्हीं में उछल–उछलकर हँस–खेल रहे हैं। पैसों की कमी थोड़े ही है, आपकी दया से पैसे तो काफी हैं। जो नहीं है, इस तरह उसी को पा जाता हूँ।"

रोहिणी ने अब मिठाईवाले की ओर देखा– उसकी आँखें आँसुओं से तर हैं।

इसी समय चुन्नू–मुन्नू आ गए। रोहिणी से लिपटकर, उसका आँचल पकड़कर बोले–"अम्माँ, मिठाई!"

"मुझसे लो।" यह कहकर, तत्काल कागज़ की दो पुडियाँ, मिठाइयों से भरी, मिठाईवाले ने चुन्नू–मून्नू को दे दीं।

रोहिणी ने भीतर से पैसे फेंक दिए।

मिठाईवाले ने पेटी उठाई और कहा–"अब इस बार ये पैसे न लूँगा।"

दादी बोली–"अरे–अरे, न न अपने पैसे लिए जा भाई!"

तब तक आगे फिर सुनाई पड़ा उसी प्रकार मादक–मृदुल स्वर में–"बच्चों को बहलानेवाला मिठाईवाला।"

– भगवतीप्रसाद वाजपेयी

प्रश्न–अभ्यास

कहानी से

1. मिठाईवाला अलग–अलग चीज़ें क्यों बेचता था और वह महीनों बाद क्यों आता था?
2. मिठाईवाले में वे कौन से गुण थे जिनकी वजह से बच्चे तो बच्चे, बड़े भी उसकी ओर खिंचे चले आते थे ?
3. विजय बाबू एक ग्राहक थे और मुरलीवाला एक विक्रेता। दोनों अपने–अपने पक्ष के समर्थन में क्या तर्क पेश करते हैं?
4. खिलौनेवाले के आने पर बच्चों की क्या प्रतिक्रिया होती थी ?
5. रोहिणी को मुरलीवाले के स्वर से खिलौनेवाले का स्मरण क्यों हो आया ?
6. किसकी बात सुनकर मिठाईवाला भावुक हो गया था? उसने इन व्यवसायों को अपनाने का क्या कारण बताया ?
7. 'अब इस बार ये पैसे न लूँगा' – कहानी के अंत में मिठाईवाले ने ऐसा क्यों कहा ?
8. इस कहानी में रोहिणी चिक के पीछे से बात करती है। क्या आज भी औरतें चिक के पीछे से बात करती हैं? यदि करती हैं तो क्यों ? आपकी राय में क्या यह सही है?

कहानी से आगे

1. मिठाईवाले के परिवार के साथ क्या हुआ होगा? सोचिए और इस आधार पर एक और कहानी बनाइए ?
2. हाट–मेले, शादी आदि आयोजनों में कौन–कौन सी चीज़ें आपको सबसे ज़्यादा आकर्षित करती हैं ? उनको सजाने–बनाने में किसका हाथ होगा? उन चेहरों के बारे में लिखिए।
3. इस कहानी में मिठाईवाला दूसरों को प्यार और खुशी देकर अपना दुख कम करता है? इस मिज़ाज की ओर कहानियाँ, कविताएँ ढूँढ़िए और पढ़िए।

अनुमान और कल्पना

1. आपकी गलियों में कई अजनबी फेरीवाले आते होंगे। आप उनके बारे में क्या–क्या जानते हैं ? अगली बार जब आपकी गली में कोई फेरीवाला आए तो उससे बातचीत कर जानने की कोशिश कीजिए।
2. आपके माता–पिता के ज़माने से लेकर अब तक फेरी की आवाज़ों में कैसा बदलाव आया है? बड़ों से पूछकर लिखिए।
3. क्या आपको लगता है कि – वक्त के साथ फेरी के स्वर कम हुए हैं? कारण लिखिए।

भाषा की बात

1. मिठाईवाला बोलनेवाली गुड़िया

   ऊपर 'वाला' का प्रयोग है। अब बताइए कि–

   (क) 'वाला' से पहले आनेवाले शब्द संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि में से क्या हैं ?

(ख) ऊपर लिखे वाक्यांशों में उनका क्या प्रयोग है ?

2. "अच्छा मुझे ज़्यादा वक्त नहीं, जल्दी से दो ठो निकाल दो।"

उपर्युक्त वाक्य में 'ठो' के प्रयोग की ओर ध्यान दीजिए। पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार की भाषाओं में इस शब्द का प्रयोग संख्यावाची शब्द के साथ होता है, जैसे, भोजपुरी में – एक ठो लइका, चार ठे आलू, तीन ठे बटुली।

ऐसे शब्दों का प्रयोग भारत की कई अन्य भाषाओं/बोलियों में भी होता है। कक्षा में पता कीजिए कि किस–किस की भाषा–बोली में ऐसा है। इस पर सामूहिक बातचीत कीजिए।

3. "वे भी, जान पड़ता है, पार्क में खेलने निकल गए हैं।"

"क्यों भई, किस तरह देते हो मुरली?" "दादी, चुन्नू–मुन्नू के लिए मिठाई लेना है। ज़रा कमरे में चलकर ठहराओ।"

भाषा के ये प्रयोग आजकल पढ़ने–सुनने में नहीं आते। आप ये बातें कैसे कहेंगे ?

कुछ करने को

1. फेरीवालों की दिनचर्या कैसी होती होगी? उनका घर–परिवार कहाँ होगा? उनकी ज़िंदगी में किस प्रकार की समस्याएँ और उतार–चढ़ाव आते होंगे? यह जानने के लिए तीन–तीन के समूह में छात्र–छात्राएँ कुछ प्रश्न तैयार करें और फेरीवालों से बातचीत करें। प्रत्येक समूह अलग–अलग व्यवसाय से जुड़े फेरीवालों से बात करे।
2. इस कहानी को पढ़कर क्या आपको यह अनुभूति हुई कि दूसरों को प्यार और खुशी देने से अपने मन का दुख कम हो जाता है? समूह में बातचीत कीजिए।
3. अपनी कल्पना की मदद से मिठाईवाले का चित्र शब्दों के माध्यम से बनाइए।

पापा खो गए

पात्र	
बिजली का खंभा	नाचनेवाली
पेड़	लड़की
लैटरबक्स	आदमी
कौआ	

सड़क। रात का समय। समुद्र के सामने फुटपाथ। वहीं पर एक बिजली का खंभा। एक पेड़। एक लैटरबक्स। दूसरी ओर धीमें प्रकाश में एक सिनेमा का पोस्टर। पोस्टर पर नाचने की भंगिमा में एक औरत की आकृति। समुद्र से सनसनाती हवा का बहाव। दूर कहीं कुत्तों के भैंकने की आवाज़।

संभा : (जम्हाई रोकते हुए) राम राम राम! रात बहुत हो गई।

पेड़ : आजकल की रातें कैसी हैं! जल्दी बीतने में ही नहीं आतीं।

संभा : दिन तो कैसे–न–कैसे हड़बड़ी में बीत जाता है।

पेड़ : लेकिन रात को बड़ी बोरियत होती है।

संभा : तब भी बरसात की रातों से तो ये रातें कहीं अच्छी हैं, पेड़राजा! बरसात की रातों में तो रातभर भीगते रहो, बादलों से आनेवाले पानी की मार खाते रहो, तेज़ हवाओं में भी बल्ब को कसकर पकड़े बराबर एक टाँग पर खड़े रहो–बिलकुल अच्छा नहीं लगता। उस वक्त लगता है, इससे तो अच्छा था .... न होता बिजली के खंभे का जन्म! बल्ब फेंक, तब दूर कहीं भाग जाने का जी होता है।

पेड़ : मुझ पर भी एक रात आसमान से गड़गड़ाती बिजली आकर पड़ी थी।

अरे, बाप रे! वो बिजली थी या आफत! याद आते ही अब भी दिल धक–धक करने लगता है और बिजली जहाँ गिरी थी वहाँ खड्डा कितना गहरा पड़ गया था, खंभे महाराज! अब जब कभी बारिश होती है तो मुझे उस रात की याद हो आती है। अंग थरथर काँपने लगते हैं।

खंभा : मेरी तबीयत ही लोहे की है जो मैं बीमार नहीं पड़ता, वरना कोई भी इस तरह बारिश, ठंडी, धूप में खड़ा रहे, तो ज़रूर बीमार पड़ जाए। पड़ जाएगा या नहीं? कितने दिन बीत गए, कितनी रातें। लेकिन मैं बराबर इसी तरह खड़ा हूँ। (लंबी ठंडी साँस छोड़कर) छे! चुंगी की यह नौकरी भी कोई नौकरी है

पेड़ : अपने पत्तो का कोट पहनकर मुझे सरदी, बारिश या धूप में अतनी तकलीफ़ नहीं होती, तो भी तुमसे बहुत पहले का खड़ा हूँ मैं यहाँ। यहीं मेरा जन्म हुआ–इसी जगह। तब सब कुछ कितना अलग था वहां के, वे सब ऊँचे–ऊँचे घर नहीं थे तब। यह सड़क भी नहीं थी। वह सिनेमा का बड़ा सा पोस्टर और उसमें नाचनेवाली औरत भी तब नहीं थी। सिर्फ सामने का यह समुद्र था। बहुत अकेलापन महसूस होता था। तुम्हें तो मिला–इतना ही सही। लेकिन वो भी कहाँ? तुम शुरू–शुरू में मुझसे बोलने को ही तैयार नहीं थे। मैंने बहुत बार कोशिश की, पर तुम्हारी अकड़ जहा थी वहीं कायम बाद में मैंने भी सोच लिया, इसकी नाक इतनी ऊँची है तो रहने दो। मैंने भी कभी आवाज़ नहीं लगाई, हाँ! अपना भी स्वभाव ज़रा ऐसा ही है।

खंभा : और एक दिन जब आँधी–पानी में मैं बिलकुल तुम्हारे ऊपर ही आ पड़ा ?

पेड़ : बाप रे! कैसा था वो आँधी–पानी का तूफान! अबबऽब!

खंभा : तुम खड़े थे, इसीलिए मैं कुछ संभल गया, हाँ। तुमने मुझे ऊपर का ऊपर झेल लिया, वह अच्छा हुआ। चाहे तुम खुद काफी ज़ख्मी हो गए। बाद में मेरा गरूर भी झड़ गया और अपनी दोस्ती हो गई।

पेड़ : हूँ! हवा आज भी बहुत है। दोनों चुप। हवा की आवाज़। कुत्ते का भौंकना। पोस्टरपर बनी नाचनेवाली औरत टेढ़ी हो जाती है। उसके घुँघरू बजते हैं। वह फिर पहले की तरह स्थिर हो जाती है। लैटरबक्स किसी दोहे का एक चरण गुनगुनाता है और रुक जाता है।

कौआ : (पेड़ के पीछे से झाँककर) काँऽव। कौन है जो रात के वक्त इतनी मीठी आवाज़ें लगाकर मेरी नींद खराब करता है ? ज़राभर चैन नहीं इन्हें।

लैटरबक्स : हूँ! मीठी आवाज़ में नहीं गाएँ तो क्या इस कौए जैसी कर्कश काँव–काँव करें ? कहता है–ज़राभर भी चैन नहीं। (पेट में हाथ डालकर एक पत्र निकालता है। धीरे से जीभ को लगाकर खोलता है। उसमें से कागज़ निकालकर रोशनी में पढ़ने लगता है।) यह किसकी चिट्ठी आकर पड़ी है ? हैडमास्टर? ठीक। क्या कहता है? श्रीमान, श्रीयुत् गोविंद राव जी.... ऊँ–ऊँ... आपका लड़का परीक्षित पढ़ाई में काफी कमज़ोर है। क्लास में उसका ध्यान पढ़ाई में बिलकुल नहीं रहता। इसकी बजाय उसे क्लास से गायब रहकर बंटे खेलना ज़्यादा अच्छा लगता है। आप एक बार खुद आकर मुझसे मिलिए... मिलिए? परीक्षित के पापा हैडमास्टर से मिल भी लेंगे, तो क्या हो जाएगा? स्कूल में बच्चे पढ़ें नहीं, क्लास से गायब रहकर बंटे खेलते रहें, इसका क्या मतलब? फीस के पैसे क्या फोकट में आते हैं? सभी पापा

लोग आफिस में इतना काम करते हैं तब कहीं जाकर मिलते हैं पैसे। उन्हें ये बच्चे फोकट के समझें, आखिर क्यों? छे! मुझे हैडमास्टर होना चाहिए था। इस परीक्षित के होश तब मैं अच्छी तरह ठिकाने लगाता। (वह पत्र रखकर दूसरा निकालता है।) यह किसका है?

खंभा : क्यों, लाल ताऊ, आज किस–किस के पत्र चोरी–चोरी पढ़ते रहे?

लैटरबक्स : (आश्चर्य से) चोरी–चोरी? चोरी किसलिए? सभी चिट्ठियाँ मेरे ही तो कब्ज़े में होती हैं। अच्छी तरह रोज़–रोज़ पढ़ता हूँ।

पेड़ : कब्ज़े में होने का मतलब यह तो नहीं, लाला ताऊ, कि लोगों की चिट्ठियाँ फाड़–फाड़कर पढ़ते रहो? पोस्टमास्टर को पता चल गया तो ?

लैटरबक्स : चलता है पता तो चल जाने दो। मेरी तरह यहाँ रात–दिन बैठकर दिखाएँ तब पता चले। परसों वह पोस्टमैन मेरे पेट में से चिट्ठियाँ निकाल रहा था और मुझे लंबी जम्हाई आई कि रोके नहीं रुकी। (जम्हाई लेता है।) वह देखता ही रह गया। चिट्ठियों का बंडल बनाकर जल्दी–जल्दी चलता बना वह। लेकिन यह लैटरबक्स, इसे नहीं बोरियत होती एक जगह बैठे–बैठे? मैं कहता हूँ, चार चिट्ठियाँ मन बहलाने के लिए पढ़ भी लीं तो क्या हो गया ?

पेड़ : लेकिन चिट्ठी जिसे लिखी गई हो, लाल ताऊ, उसे ही पढ़नी चाहिए। वह प्राइवेट होती है प्राइवेट।

लैटरबक्स : मैं कहाँ किसी की चिट्ठी पास रख लेता हूँ? जिसकी होती है उसे मिल ही जाती है। किसी की गुप्त बातें मैं कब बाहर निकलने देता हूँ? वह मुझ तक ही रहती हैं। इसीलिए तो मुझे अपना बहुत महत्त्व लगता है।

पेड़ : कोई आ रहा लगता है–

सब चुप हो जाते हैं। पोस्टर पर बनी नाचनेवाली का संतुलन फिर से बिगड़ता है। फिर पहले की तरह स्थिर और स्तब्ध हो जाती है। तेज़ हवा की भनभनाहट। भिखारी जैसा एक आदमी आता है। उसके कंधे पर सोई हुई एक लड़की है।

आदमी : मैं बच्चे उठानेवाला हूँ। दूसरा कोई काम करने की मेरी इच्छा नहीं होती। अभी थोड़ी देर पहले एक घर से यह लड़की उठाई है मैंने। गहरी नींद सो रही थी। अब तक उठी नहीं है। उठेगी भी नहीं, मैंने इसे थोड़ी बेहोशी की दवा जो दी है। अब मुझे लगी है भूख। दिनभर कुछ खाने का वक्त ही नहीं मिला। पेट में जैसे चूहे दौड़ रहे हों! .... तो ऐसा किया जाए.... इसे यही लेटाकर अपने ज़रा कुछ खाने की तलाश करें... देखें कुछ मिल जाए तो! इतनी रात गए यहाँ इस वक्त अब किसी का आना मुमकिन नहीं।

पेड़ की ओट में लड़की को डाल देता है। उस पर अपना कोट फेला देता है और इधर–उधर ज़रा चौकस होकर देखता है। फिर एक–एक कदम सावधानी से रखता हुआ निकल जाता है।

खंभा : (पेड़ से) श–ऽऽ पेड़ राजा, दाल में कुछ काला नज़र आता है।

पेड़ : वह ज़रूर बहुत बुरा आदमी है कोई। और यह लड़की तो छोटी सी है।

लैटरबक्स : वह उसे कहीं से उठाकर लाया है। मैंने सुना है।

पेड : (कौए को जगाते हुए) श श श! एऽए कौए, जाग न? जाग!

कौआ : दिन हो गया ?

पेड़ : नहीं, दिन नहीं हुआ, पर एक दुष्ट आदमी एक छोटी सी लड़की को कहीं से उठाकर ले आया है। चुप्प! वो आदमी इस वक्त यहाँ नहीं है।

वो लड़की उठ जाएगी तो चिल्लाएगी।

कौआ : (आलस से उठते हुए) आँखों पर एक चुल्लू पानी डालकर अभी आया। (जाता है)

खंभा : भयंकर, बहुत ही भयंकर!

पेड़ : (झुककर लड़की को देखकर) बच्ची बहुत प्यारी है। कौन जाने किसकी है!

लैटरबक्स : (मुड़कर देखते हुए) नासपीटे ने सोई हुई को उठा लिया कहीं से। चील जैसे चूहा उठा लेती है, वैसे।

खंभा : मैं भी देखना चाहता हू उसे, पर मुझसे झुका ही नहीं जाता। लाल ताऊ, अभी भी सो रही है क्या वो ?

लैटरबक्स : हाँ–हाँ–हाँ, खंभे महाराज।

कौआ : (आकर) कौन उठा लाया ? किसे ? बोलो अब।

पेड़ : इसे... इस छोटी लड़की को एक दुष्ट आदमी उठा लाया है।

कौआ : (देखकर) अच्छा... यह लड़की! और वह दुष्ट आदमी कहाँ है? इसे उठाकर लानेवाला ?

खंभा : वह ज़रा गया है खाने की तलाश में ... भूख लगी थी उसे।

लैटरबक्स : थोड़ी ही देर में आ जाएगा नासपीटा और यह खिलौने–सी बच्ची... (गला रुँध जाता है।) नहीं नहीं, ऐसी कल्पना भी नहीं की जा सकती। कौन जाने क्या होगा इस बच्ची का!

कौआ : हाँ सच! आजकल कुछ दुष्ट लोग बच्चों को उठा ले जाते हैं। मैं तो घूमता रहता हूँ न ? ऐसा होते देखा है।

पेड़ : मैं बताऊँ? अपन यह काम नहीं होने देंगे।

लैटरबक्स : पर मैं कहता हूँ, यह होगा कैसे ?

खंभा : होगा कैसे मतलब ? उस दुष्ट को मज़े से इस बच्ची को उठा ले जाने दें ?

कौआ : वह दुष्ट है कौन ? पहले उसे नज़र तो आने दीजिए।

लैटरबक्स : मैंने देखा है नासपीटे को। अच्दी तरह करीब से देखा है। बहुत ही दुष्ट लगा मुझे तो । कैसी नज़र थी उसकी! घड़ीभर को तो मुझे लगा, कहीं यह मुझे ही न उठा ले जाए।

कौआ : ताऊ , आपको ?

खो खो करके हँसता है। छोटी लड़की अब तक कुछ जाग चुकी है। अधखुली आँखों से सामने देखती है– पेड़, खंभा, लैटरबक्स और कौआ एक दूसरे से बातें कर रहे हैं।

लैटरबक्स : इतना मुँह फाड़कर हँसने की क्या बात है इसमें?

खंभा : उसकी वह गंदी नज़र, यहां से मुझे भी खूब अच्छी तरह दिखाई दे रही थी।

पेड़ : छोटे बच्चों को उठाने से ज़्यादा बुरा काम और क्या हो सकता है ?

लड़की उठकर बैठ जाती है। स्पप्न देखने जैसी भाव–मुद्रा।

लैटरबक्स : कैसा मन होता है नासपीटों का? उनका वही जानें! उनका वही जानें!

कौआ : ताऊ, एक जगह बैठे रहकर यह कैसे जान सकोगे? उसके लिए तो मेरी तरह रोज़ चारों दिशाओं में गश्त लगानी पड़ेगी तब जान पाओगे यह सब।

पेड़ : काफी समझदार है तू। अरे यह हमसे कैसे हो सकेगा?

लड़की स्पप्न देखती हुई–सी खड़ी है।

लड़की : अं? क्या? ये सब बोल रहे हैं? लैटरबक्स, बिजली का खंभा, ये पेड़..... कौआ... कौआ सबको इशारा करता है। तभी सब एकदम चुप, स्तब्ध

हो जाते हैं। लड़की इन सबके पास जाकर खड़ी हो जाती है। अच्छी तरह सबको देखती है, पर सभी निर्जीव लगते हैं। लड़की : ये तो ठीक लग रहे हैं। फिर मुझे जो दिखाई दिया वह सपना था... या कुछ और? (फिर गौर से देखती है, सभी निःस्तब्ध।) कौन बोल रहा था? कौन गप्पें मार रहा था? (सभी चुप) कौन बातें कर रहा था ? मुझे.... मुझे डर लग रहा है। मैं कहाँ हूँ? यह....यह सब क्या है ? मेरा घर कहाँ है? मेरे पापा कहाँ हैं? मम्मी कहाँ हैं? कहाँ हूँ मैं? मुझे... मुझे बहुत डर लग रहा है... बहुत डर लग रहा है कैसा अँधेरा है चारों तरफ रात है... सपना देख रही थी मैं। पर सब सच है.. कोई तो बोली न... नहीं तो चीखूँगी मैं... चीखूँगी। सभी चुप। स्तब्ध। लड़की घबराकर एक कोने में अंग सिकोड़कर बैठ जाती है। फिर अपना सिर घुटनों में डाल लेती है।

लड़की : मुझे डर लग रहा है... मुझे डर लग रहा है....

लैटरबक्स : (पेड़ से) अब मुझसे चुप नहीं रहा जाता... बहुत घबरा गई है। (आगे सरककर) बच्ची घबरा मत....

लड़की : (पहले ऊपर देखती है फिर सामने) कौन ?

लैटरबक्स : मैं हूँ, लैटरबक्स।

लड़की : तुम.... तुम बोलते हो?

लैटरबक्स : हाँ, मेरे मुँह नहीं है क्या?

लड़की : तुम चलते भी हो ?

लैटरबक्स : हाँ, आदमियों को देख–देखकर।

लड़की : सच ?

लैटरबक्स : उसमें क्या है ? (थोड़ा चलकर दिखाता है) पर तू घबरा मत।

लैटरबक्स बोलता है... चलता भी है!

लैटरबक्स : (खुश होकर) वैसे मैं थोड़ा सा गा भी लेता हूँ। कुछ भजन वगैरह।

लड़की : सच?

लैटरबक्स : (भजन की एक लाइन गाता है।) हूँ!

लड़की : तुम मज़ेदार हो। बहुत–बहुत अच्छे हो।

लैटरबक्स : पर मैं बहुत लाल हूँ। नासपीटों के पास जैसे दूसरा रंग ही नहीं था। लाल रंग पोत दिया मुझ पर।

लड़की : लैटरबक्स, तुम सच्ची बहुत अच्छे हो। पर मुझे न, अभी भी बिलकुल सच नहीं लग रहा है। सपना लग रहा है... सपना।

लैटरबक्स : कभी न देखी हो ऐसी चीज़ देख लो यों ही लगता है। तू रहती कहाँ है?

लड़की : मैं अपने घर में रहती हूँ।

लैटरबक्स : बहुत अच्छे! हर किसी को अपने घर ही रहना चाहिए। पर तेरा यह घर है कहाँ?

लड़की : सड़क पर। आसान तो है मिलनी हमारी गली एक बड़ी सड़क पर है, हा। उस सड़क पर न, आदमी–ही–आदमी आते–जाते रहते हैं।

लैटरबक्स : यह तो अच्छा ही है कि हम घरों में हों, घर गली में, गलियां सड़कों पर और सड़कों पर बहुत से लोग हों। इससे चोरी–वारी भी कम होती है। पर तुम्हारी इस सड़क का नाम क्या है ?

लड़की : नाम? हमारे घरवाली सड़क।

लैटरबक्स : अरे, वह तो तुम्हारा दिया हुआ नाम है न? जैसे मुझे सबने नाम दिया है लाल ताऊ। पर मेरा असली नाम तो लैटरबक्स है।

लड़की : ये सब कौन? ये सब यानी कौन ? यहाँ तो कोई नहीं है।

लैटरबक्स : (हड़बड़ाकर) है। नहीं–नहीं... यहाँ तो कोई नहीं। मैं वैसे बता रहा था तुझे... कोई मुझे ऐसे कहे तो...

पेड़, खंभा, कौआ–सभी ठंडी लंबी सांस लेते हैं।

लैटरबक्स : तो तेरी उस सड़क का–लोगों का दिया हुआ नाम क्या है ?

लड़की : मुझे नहीं पता। सभी उसे सड़क कहते हैं, सच। कोई–कोई रोड भी कहता है, रोड।

लैटरबक्स : (पेट से लिफाफे निकालकर दिखाते हुए) यह देख, इस पर जैसे पता लिखा हुआ है, वैसा पता नहीं है तेरा ?

लड़की : मुझे नहीं पता। सच्ची, मुझे नहीं पता।

खंभा : (बीच में ही) कमाल है

लड़की आश्चर्य से खंभे की तरफ देखती है। वह चुप।

लड़की : कौन बोला यह, कमाल है? अँ.. कौन ?

लैटरबक्स : खंभा.... (जीभ काटकर) नहीं–नहीं, यूँ ही लगा है तुझे यूँ ही...

लड़की : मुझे सुनाई दिया है वहां से ऊपर से।

पेड़ : हँ! (एकदम मुह पर टहनी रखता है।)

लड़की : देखो, वहाँ से... वहां से आई है आवाज़। ज़रूर आई है। उस पेड़ पर से आई है।

कौआ : मैंने नहीं की। (चोंच दबाकर रखता है।)

लड़की : कौन बोला यह? कौन ? कौआ ?

खंभा : गधा है यह भी।

पेड़ : जब न बोलना हो तो ज़रूर... पोस्टर पर बनी नाचनेवाली का संतुलन पुनः बिगड़ता है वह फिर से अपने पाँव टिकाती है। घुँघरुओं की आवाज़।

लड़की : वो देखो, देखो, कोई नाच रहा हे। (सभी एकटक देखते रहते हैं।) क्या है यह? क्या है? कौन बोलता है? कौन नाच रहा है? कौन ?

लैटरबक्स : (प्यार से) देख, तू बिलकुल घबरा मत। हमीं बोल रहे हैं, हमीं नाच रहे हैं, चल रहे हैं, गा भी रहे हैं।

लड़की : हमीं मतलब कौन? बताओ न? बताओ जल्दी।

लैटरबक्स : हमीं... यानी कि हमीं... मैं लैटरबक्स, ये पेड़ वह बिजली खंभा... यह कौआ भी। वह सिनेमा का पोस्टर।

लड़की : कसम से?

लैटरबक्स : कसम से। बस इन्सानों के सामने हम नहीं करते यह सब। इन्सानों को ऐसा दिखाई देता है, भूत करते हैं यह सब तो। घबरा जाते हैं। इसीलिए जब हम अकेले होते हैं तब बोलते, चलते, नाचते...

नाचनेवाली का संतुलत पुनः बिगड़ता है। घुँघरुओं की आवाज़। वह फिर पहले की स्थिति में आती है।

लड़की : मज़े हैं। खूब–खूब मज़ें हैं (अपने इर्द–गिर्द सबको देखती है।) लैटरबक्स, अब मुझे यहाँ डर नहीं लगता... ज़रा भी डर नहीं लगता।

खंभा पेड़ कौआ : शाब्बाश

लड़की हैरान होती है, फिर ताली बजाकर खिलखिलाकर हँसती है।

लड़की : सब चलकर पहले मेरे पास आओ। (सभी पहले हिचकिचाते हैं।) आओ न पास...। नहीं तो मैं नहीं बोलूँगी, जाओ। (सब बारी–बारी से पास आते हैं।) बैठो। (सब बैठ जाते हैं, सिर्फ खंभा सीधा खड़ा है।) खंभे...खंभे, नीचे बैठो। (वह अभी भी खड़ा है।) बैठो न देखो, नहीं तो मैं रोऊँगी।

लैटरबक्स : अरे, मैं बताता हूँ तुझे। उससे बिलकुल बैठा नहीं जाता।

लड़की : क्यों ?

पेड़ : क्योंकि जब से वह यहा खड़ा किया गया तबसे कभी बिलकुल बैठा ही नहीं।

लड़की : (व्याकुल होकर) अय्या रे मतलब यह बिच्चारा लगातार खड़ा ही रहता है, टीचर से जैसे सज़ा मिली हो? (खंभा स्वीकृतिसूचक गरदन हिलाता है।) फिर तो चलो, हम सब मिलकर इसे बिठाते हैं। हँ? चलो. ..

सब मिलकर बड़े यत्न से खंभे को बैठाते हैं। बैठने में उसे बहुत तकलीफ होती है, लेकिन बाद में बैठ जाता है।

लड़की : (ताली बजाती है।) एक लड़का बैठ गया। बैठ गया जी, एक लंबा लड़का बैठ गया!

खंभा : (ज़रा सुख महसूस करते हुए) बहुत अच्छा लग रहा है बैठकर। सच–सच बताऊँ? हम खड़े रहते हैं न, तब बैठने का सपना देखते हैं। सपने में भी बैठना कितना अच्छा लगता है।

लड़की : मुझे भी वेसा ही लग रहा है। मैं यहाँ कैसे आ गई? मुझे बिलकुल भी पता नहीं।

पेड़ : मैंने देखा था... (जीभ काटता है।) अहँ... मैंने नहीं देखा, मैं यह कह रहा था।

लड़की : यह लड़का जो जी में आए बोल देता है। तुम्हें ज़ीरो नंबर।

पेड़ : (खंभे को आँख मारकर) चलो ठीक। ज़ीरो तो ज़ीरो सही।

लड़की : ए, हम अब खेलें? हँ? (पोस्टर पर बनी नाचनेवाली का संतुलन फिर खोता है। घुँघरुओं की आवाज़) मज़्ज़ा! एक लड़की बार–बार गिर रही है। गिर रही है। (ज़रा सोचकर) मैं तुम्हें नाच करके दिखाऊँ? हँ?

मेरी मम्मी ने सिखाया है मुझे दिखाऊँ करके?

सभी : हां, हां, दिखाओं न? वाह!

लड़की नाच करने लगती है।

पेड़ : (खंभे से धीरे से) थोड़ी देर में वह भी आ जाएगा।

खंभा : कौन ?

पेड़ : वह... वही...दुष्ट आदमी... वह बच्चे उठानेवाला।

खंभा : सचमुच (कौए से) उसके आने का वक्त हो गया।

कौआ : किसके ?

खंभा : हूँ... उस बच्चे उठानेवाले का। इसे अभी ले जाएगा वह।

लैटरबक्स : बाप रे! तब फिर ?

पेड़ : क्या किया जाए ?

खंभा : कुछ तो करना ही पड़ेगा

पेड़ : लेकिन क्या ?

पोस्टर पर बनी नाचनेवाली आती है। लड़की और वह दोनों मिलकर नाचने लगती हैं। सभी दाद देते हैं। नाच खूब रंग में आता है। सभी भाग लेते हैं। पर बीच में ही एक दूसरे के कान में कुछ फुसफुसाते हैं। पुनः नाचते हैं। दाद देते हैं। तभी वह दुष्ट आदमी आता है। देखते ही सब निःस्तब्ध। नाचनेवाली पोस्टर के बीच जा खड़ी होती है। सभी अपनी–अपनी जगह पर और वह लड़की घबराकर पेड़ के पीछे दुबक जाती है।

आदमी : (मूँछों पर हाथ फेरकर डकार लेता है।) वाह पेट भर खा लिया। अब आगे चला जाए। (लड़की जहाँ सो रही थी वह देखता है, सिर्फ कोटर ही वहां दिखाई पड़ता है। उसका चेहरा बदलता है।) कहाँ गई ? गई

कहाँ वह छोकरी ? मैं छोडूगाँ नहीं उसे। अभी, पकड़ के लाता हूँ। मुझे चकमा देती है!

ढूँढ़ने लगता है। पेड़, खंभा, लैटरबक्स, पोस्टर इन सबके बीचोंबीच लपक–झपक कर लड़की बचने का प्रयत्न करती है और वह दुष्ट आदमी पीछे–पीछे। होते–होते सभी वस्तुएँ सरकते–सरकते उसके रास्ते में आने लगती हैं। उस छोटी लड़की का संरक्षण करने लगती हैं। धीरे–धीरे इस सारे क्रम का वेग बढ़ने लगता है जिसे ढोलक या तबले की ताल भी मिलती है। लड़की किसी भी तरह उस दुष्ट आदमी के हाथ नहीं लगती। तभी एकदम से कौआ चिल्लाता है।

कौआ : भूत

पीछे–पीछे पेड़, खंभा, लैटरबक्स नाचते हुए चिल्लाने लगते हैं।

पेड़
खंभा : भूत...भूत!
लैटरबक्स

तीनों और ज़्यादा ज़ोर–ज़ोर से चिल्लाते–चीखते हैं। इसी के साथ 'भूत–भूत' करता वह दुष्ट आदमी घबराकर भाग निकलता है। सभी पेट पर हाथ रखे जी भरकर हँसते हैं।

खंभा : मज़ा आ गया!

कौआ : खूब भद्द उडाई!

पेड़ : क्यों उठाकर लाया था बच्ची को ? बड़ा आया बच्चे चुराकर भागनेवाला! अच्छी खातिर की उसकी!

लैटरबक्स : अच्छी नाक कटी दुष्ट की।

खंभा : अरे, पर वो कहाँ है ?

कौआ : वो कौन ?

पेड़ : कौन ?

खंभा : वो... वो छोटी... लड़की अपनी....

लैटरबक्स : अरे–अरे वो... वो कहाँ गई ?

पेड़ : कौन ?

कौआ : देखूँ...देखते हैं.....

इधर–उधर देखते हैं, पर लड़की का कहीं पता नहीं। सभी चिंताग्रस्त।

खंभा : गई कहाँ ?

कौआ : यहीं तो थी।

पेड़ : कहीं नहीं मिल रही।

लैटरबक्स : उठाकर तो नहीं ले गया बच्ची को बदमाश ?

फिर से ढूँढते हैं। लड़की नहीं मिलती। सभी घबराए हुए हैं। पोस्टर पर बनी नाचनेवाली भी जहाँ की तहाँ उसी भंगिमा में बैठी है।

कौआ : (निराश) नहीं भई, कहीं दिखाई नहीं देती।

पेड़ : मुझे तो लगता है, बहुत करके वही ले गया होगा उसे...

लैटरबक्स : कितनी प्यारी बच्ची थी रे, कितनी प्यारी!

खंभा : और स्वभाव कितना अच्छा था उसका।

सभी शोकग्रस्त बैठे हैं। तभी नाचनेवाली के पीछे से लड़की धीरे से झाँकती है।

लड़की : (शरारत से) मैं यहां हूं... मुझे पकड़ो

सभी आनंदित होकर इधर–उधर देखने लगते हैं। उसे पकड़ने दौड़ते हैं। वह पकड़ में नहीं आती। सबको भगाती रहती है। सब थक

जाते हैं। आखिर कौआ उसे पकड़ता है।

कौआ : (धप से) कैसे पकड़ ली!

लड़की : पर पहले कैसे घबरा गए थे सब? अहा मज़्ज़ा (ताली बजाती है। पोस्टर पर बनी नाचनेवाली भी ताली बजाती है। लड़की थककर बैठ जाती है।) खूब मज़्ज़ा आया। मुझे ज़रा साँस लेने दो अब। ए, पर मैं बहुत घबरा गई थी उस दुष्ट आदमी से। तुम्हीं ने बचा लिया मुझे। अहा मुझे... बहुत नींद आ रही है। थक गई मैं। (लेटती है।) बहुत थक गई। मुझे उठा देना, हाँ.... फिर हम मज़ा करेंगे... बहुत थक गई। मुझे उठा देना हाँ.... फिर हम मज़ा करेंगे। (गहरी नींद सो जाती है। सब उसे देखते हुए खड़े हैं—प्यार से)।

कौआ : सो गई बच्ची।

पेड़ : थक गई थी न बहुत? तभी झट से सो गई।

लैटरबक्स लड़की को प्रेम से थपथपाने लगता है। कौआ उसके पैर दबाता है।

खंभा : थोड़ी देर बाद सुबह हो जाएगी।

पेड़ : तब यह कहां जाएगी ?

लैटरबक्स : उसे अपने घर का पता—ठिकाना ही नहीं मालूम, अपनी गली का नाम तक नहीं बता सकती वह। बेचारी को अपने पापा का नाम भी नहीं मालूम। छोटी है अभी।

खंभा : तो इसका क्या होगा ? कहाँ जाएगी यह ?

लैटरबक्स : सचमुच रे, कहाँ जाएगी ?

कौआ : मैं बताऊँ ?

सभी : क्या ?

कोआ : हम सब मिलकर कुछ करें तो इसको पापा से मिलवा सकते हैं।

सभी : (उठकर) कैसे ?

कौआ : आसान है। सुबह जब हो जाए पेड़ राजा, तो आप अपनी घनी–घनी छाया इस पर किए रहें, वह आराम से देर तक सोती रहेगी और खंभे महाराज, आप ज़रा टेढ़े होकर खड़े रहिए।

खंभा : इससे क्या होगा ?

कौआ : पुलिस को लगेगा, एक्सीडेंट हो गया। वो यहाँ आएगी और हमारी इस छोटी सहेली को देखेगी। वो लगाएगी इसके घर का पता। पुलिस सबके घर का पता मालूम करती है। खोए हुए बच्चों को उनके घर पहुँचाती है।

खंभा : रहूँगा, मैं आड़ा होकर खड़ा रहूँगा। पर मान लो, पुलिस नहीं आई तो?

कौआ : मैं बराबर यहां ज़ोर–ज़ोर से काँव–काँव करता रहूँगा। लोगों का ध्यान इधर खींचूँगा। उनकी चीज़ें अपनी चोंच से उठा–उठाकर लाता जाऊँगा।

लैटरबक्स : पर तब भी कोई नहीं आया तो ?

कौआ : तो आपको एक काम करना होगा, लाल ताऊ।

लैटरबक्स : ज़रूर करूँगा, अपनी अच्छी गुड़िया के लिए तो कुछ भी करूँगा। एक बार घर पहुँचा दिया कि सब ठीक हो गया समझो। क्या करूँ? बता।

कौआ : आपको लिखना–पढ़ना आता है न ? कान में बात करने लगता है। तभी पोस्टर पर बनी नाचनेवाली गिर पड़ती हैं। घुँघरुओं की आवाज़। पुनः जैसे–तैसे वह अपनी पहले जैसी भंगिमा बनाकर खड़ी

होती है।

लैटरबक्स : (बीच में ही कौए से) उससे क्या होगा ? कौआ उसके कान में और कुछ कहता है। लैटरबक्स स्वीकृति में गरदन हिलाता है। अँधेरा। कुछ देर बाद उजाला। सुबह होती है। खंभा अपनी जगह पर टेढ़ा होकर खड़ा है। पेड़ सोई हुई लड़की पर झुककर अपनी छाया किए हुए है। कौए की काँव–काँव ज़ोर–ज़ोर से सुनाई दे रही है और सिनेमा के पोस्टर पर बड़े–बड़े अक्षरों मे लिखा है–पापा खो गए हैं। पोस्टर पर बनी नाचनेवाली की इससे मेल खानेवाली भंगिमा। लैटरबक्स धीरे से सरकता हुआ प्रेक्षकों की ओर आता है।

लैटरबक्स : शः! शः! लाल ताऊ बोल रहा हूँ। आप में से किसी को अगर हमारी इस प्यारी सी बच्ची के पापा मिल जाएँ तो उन्हें जितनी जल्दी हो सके यहाँ ले आइएगा।

परदा गिरता है।

– विजय तेंदुलकर

प्रश्न–अभ्यास

नाटक से

1. नाटक में आपकों सबसे बुद्धिमान पात्र कौन लगा और क्यों ?
2. पेड़ और खंभे में दोस्ती कैसे हुई ?
3. लैटरबक्स को सभी लाल ताऊ कहकर क्यों पुकारते थे ?
4. लाल ताऊ किस प्रकार बाकी पात्रों से भिन्न है ?
5. नाटक में बच्ची को बचानेवाले पात्रों में एक ही सजीव पात्र है। उसकी कौन–कौन

सी बातें आपको मज़ेदार लगीं ? लिखिए।

6. क्या वजह थी कि सभी पात्र मिलकर भी लड़की को उसके घर नहीं पहुँचा पा रहे थे ?

नाटक से आगे

1. अपने–अपने घर का पता लिखिए तथा चित्र बनाकर वहाँ पहुँचने का रास्ता भी बताइए।
2. मराठी से अनूदित इस नाटक का शीर्षक 'पापा खो गए' क्यों रखा गया होगा ? अगर आपके मन में कोई दूसरा शीर्षक हो तो सुझाइए और साथ में कारण भी बताइए।
3. क्या आप बच्ची के पापा को खोजने का नाटक से अलग कोई और तरीका बता सकते हैं ?

अनुमान और कल्पना

1. अनुमान लगाइए कि जिस समय बच्ची को चोर ने उठाया होगा वह किस स्थिति में होगी ? क्या वह पार्क/मैदान में खेल रही होगी या घर से रूठकर भाग गई होगी या कोई अन्य कारण होगा ?
2. नाटक में दिखाई गई घटना को ध्यान में रखते हुए यह भी बताइए कि अपनी सुरक्षा के लिए आजकल बच्चे क्या–क्या कर सकते हैं। संकेत के रूप में नीचे कुछ उपाय सुझाए जा रहे हैं। आप इससे अलग कुछ और उपाय लिखिए।

   समूह में चलना।

   एकजुट होकर बच्चा उठानेवालों या ऐसी घटनाओं का विरोध करना

   अनजान व्यक्तियों से सावधानीपूर्वक मिलना।

भाषा की बात

1. आपने देखा होगा कि नाटक के बीच–बीच में कुछ निर्देश दिए गए हैं। ऐसे निर्देशों से नाटक के दृश्य स्पष्ट होते हैं, जिन्हें नाटक खेलते हुए मंच पर दिखाया जाता है, जैसे – 'सड़क/रात का समय... दूर कहीं कुत्तों के भौंकने की आवाज़।' यदि आपको रात का दृश्य मंच पर दिखाना हो तो क्या–क्या करेंगे, सोचकर लिखिए।
2. पाठ को पढ़ते हुए आपका ध्यान कई तरह के विराम चिह्नों की ओर गया होगा। अगले पृष्ट पर दिए गए अंश से विराम चिह्नों को हटा दिया गया है। ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा उपयुक्त चिह्न लगाइए –

मुझ पर भी एक रात आसमान से गड़गड़ाती बिजली आकर पड़ी थी अरे बाप रे वो बिजली थी या आफत याद आते ही अब भी दिल धक–धक करने लगता है और बिजली जहाँ गिरी थी वहाँ खड्डा कितना गहरा पड़ गया था खंभे महाराज अब जब कभी बारिश होती है तो मुझे उस रात की याद हो आती है, अंग थरथर काँपने लगते हैं।

3. आसपास की निर्जीव चीज़ों को ध्यान में रखकर कुछ संवाद लिखिए, जैसे–
   - चॉक का ब्लैक बोर्ड से संवाद
   - कलम का कॉपी से संवाद
   - खिड़की का दरवाज़े से संवाद
4. उपर्युक्त में से दस–पंद्रह संवादों को चुनें, उनके साथ दृश्यों की कल्पना करें और एक छोटा सा नाटक लिखने का प्रयास करें। इस काम में अपने शिक्षक से सहयोग लें।

शाम–एक किसान

आकाश का साफा बाँधकर
सूरज की चिलम खींचता

बैठा है पहाड़,
घुटनों पर पड़ी है नदी चादर–सी,
पास ही दहक रही है
पलाश के जंगल की अँगीठी
अँधकार दूर पूर्व में
सिमटा बैठा है भेड़ों के गल्ले–सा।

अचानक–बोला मोर।
जैसे किसी ने आवाज़ दी–
'सुनते हो'।
चिलम औंधी
धुआँ उडा–
सूरज डूबा
अँधेरा छा गया।

–सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

कविता के बारे में

कवि ने किसान के रूप में जाड़े की शाम के प्राकृतिक दृश्य का चित्रण किया है। इस प्राकृतिक दृश्य में पहाड़–बैठे हुए एक किसान की तरह दिखाई दे रहा है, आकाश–उसके सिर पर बँधे साफे के समान, पहाड़ के नीचे बहती हुई नदी–घुटनों पर रखी चादर–सी, पलाश के पेड़ों पर खिले लाल–लाल फूल–जलती अँगीठी के समान, पूर्व क्षितिज पर घना होता अँधकार–झुँड में बैठी भेड़ों जैसा और पश्चिम दिशा में डूबता सूरज–चिलम पर सुलगती आग की भाँति दिख रहा है। यह पूरा दृश्य शांत है। अचानक मोर बोल उठता है। मानो किसी ने आवाज़ लगाई– 'सुनते हो'। इसके बाद यह दृश्य घटना में बदल जाता है– चिलम उलट जाती है, आग बुझ जाती है, धुआँ उठने लगता है, सूरज डूब जाता है, शाम ढल जाती है और रात का अँधेरा छा जाता है।

प्रश्न –अभ्यास

कविता से

1. इस कविता में शाम के दृश्य को किसान के रूप में दिखाया गया है – यह एक रूपक है। इसे बनाने के लिए पाँच एकरूपताओं की जोड़ी बनाई गई है। उन्हें उपमा कहते हैं। पहली एकरूपता आकाश और साफे में दिखाते हुए कविता में 'आकाश का साफा' वाक्यांश आया है। इसी तरह तीसरी एकरूपता नदी और चादर में दिखाई गई है, मानो नदी चादर–सी हो। अब आप दूसरी, चौथी और पाँचवी एकरूपताओं को खोजकर लिखिए।
2. शाम का दृश्य अपने घर की छत या खिड़की से देखकर बताइए –

   (क) शाम कब से शुरू हुई ?

(ख) तब से लेकर सूरज डूबने में कितना समय लगा ?

(ग) इस बीच आसमान में क्या–क्या परिवर्तन आए ?

3. मोर के बोलने पर कवि को लगा जैसे किसी ने कहा हो– 'सुनते हो'। नीचे दिए गए पक्षियों की बोली सुनकर उन्हें भी एक या दो शब्दों में बाँधिए –

कबूतर	कौआ	मैना
तोता	चील	हंस

कविता से आगे

1. इस कविता को चित्रित करने के लिए किन–किन रंगों का प्रयोग करना होगा ?
2. शाम के समय ये क्या करते हैं ? पता लगाइए और लिखिए–

पक्षी	खिलाड़ी	फलवाले	माँ
पेड़–पौधे	पिता जी	किसान	बच्चे

3. हिंदी के एक प्रसिद्ध कवि सुमित्रानंदन पंत ने संध्या का वर्णन इस प्रकार किया है–

संध्या का झुटपुट–
बाँसों का झुरमुट–
है चहक रहीं चिड़ियाँ
टी–वी–टी– – टुट्–टुट्

ऊपर दी गई कविता और सर्वेश्वरदयाल जी की कविता में आपको क्या मुख्य अंतर लगा? लिखिए।

अनुमान और कल्पना

शाम के बदले यदि आपको एक कविता सुबह के बारे में लिखनी हो तो किन–किन

चीज़ों की मदद लेकर अपनी कल्पना को व्यक्त करेंगे ? नीचे दी कविता की पंक्तियों के आधार पर सोचिए –

पेडों के झुनझुने
बजने लगे;
लुढ़कती आ रही है
सूरज की लाल गेंद।
उठ मेरी बेटी, सुबह हो गई।

– सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

भाषा की बात

1. नीचे लिखी पंक्तियों में रेखांकित शब्दों को ध्यान से देखिए –

(क) घुटनों पर पड़ी है नदी चादर–सी
(ख) सिमटा बैठा है भेड़ों के गल्ले–सा
(ग) पानी का परदा–सा मेरे आसपास था हिल रहा
(घ) मँडराता रहता था एक मरियल–सा कुत्ता आसपास
(ङ) दिल है छोटा–सा छोटी सी आशा
(च) घास पर फुदकती नन्ही–सी चिड़िया

इन पंक्तियों में सा/सी का प्रयोग व्याकरण की दृष्टि से कैसे शब्दों के साथ हो रहा है ?

2. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग आप किन संदर्भों मे करेंगे ? प्रत्येक शब्द से दो–दो वाक्य बनाइए –

औंधी दहक सिमटा

रहीम के दोहे

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
बिपति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत।।1।।

जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह।
रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छाँड़ति छोह।।2।।

तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियत न पान।
कहि रहीम परकाज हित, संपति–सचहिं सुजान।।3।।

थोथे बादर क्वार के, ज्यों रहीम घहरात।
धनी पुरुष निर्धन भए, करें पाछिली बात।।4।।

धरती की–सी रीत है, सीत घाम औ मेह।
जैसी परे सौ सहि रहे, त्यों रहीम यह देह।। 5।।

प्रश्न –अभ्यास

दोहे से

1. पाठ में दिए गए दोहों की कोई पंक्ति कथन और कोई कथन को प्रमाणित करनेवाला उदाहरण। इन दोनों प्रकार की पंक्तियों को पहचान कर अलग–अलग लिखिए।

2. रहीम ने क्वार के मास में गरजनेवाले बादलों की तुलना ऐसे निर्धन व्यक्तियों से क्यों की है जो पहले कभी धनी थे और बीती बातों को बताकर दूसरों को प्रभावित करना चाहते हैं ? दोहे के आधार पर आप सावन के बरसने और गरजनेवाले बादलों के विषय में क्या कहना चाहेंगे ?

दोहों से आगे

1. नीचे दिए गए दोहों में बताई गई सच्चाइयों को यदि हम अपने जीवन में उतार लें तो उनके क्या लाभ होंगे ? सोचिए और लिखिए–

(क) तरुवर फल .... सचहिं सुजान।।

(ख) धरती की–सी.............. यह देह।।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के चलित हिंदी रूप लिखिए :

जैसे – परे–पड़े (रे, ड़े)

बिपति	बादर
मछरी	सीत

2. नीचे दिए उदाहरण पढ़िए –

(क) बनत बहुत बहु रीत।

(ख) जाल परे जल जात बहि।

उपर्युक्त उदाहरणों की पहली पंक्ति में 'ब' का प्रयोग कई बार किया गया है और दूसरी में 'ज' का प्रयोग। इस प्रकार बार–बार एक ध्वनि के आने से भाषा की सुंदरता बढ़ जाती है। वाक्य रचना की इस विशेषता के अन्य उदाहरण खोजकर लिखिए।

एक तिनका

मैं घमंडों में भरा ऐंठा हुआ,
एक दिन जब था मुंडेरे पर खड़ा।
आ अचानक दूर से उड़ता हुआ,
एक तिनका आँख में मेरी पड़ा।

मैं झिझक उठा, हुआ बेचैन–सा,
लाल होकर आँख भी दुखने लगी।
मूँठ देने लोग कपड़े की लगे,
ऐंठ बेचारी दबे पाँवों भागी।

जब किसी ढब से निकल तिनका गया,
तब 'समझ' ने यों मुझे ताने दिए।
ऐंठता तू किसलिए इतना रहा,
एक तिनका है बहुत तेरे लिए।

– अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

प्रश्न –अभ्यास

कविता से

1. नीचे दी गई कविता की पंक्तियों को सामान्य वाक्य में बदलिए।

    जैसे–एक तिनका आँख में मेरी पड़ा–मेरी आँख में एक तिनका पड़ा।

    मूँठ देने लोग कपड़े की लगे–लोग कपड़े की मूँठ देने लगे।

    (क) एक दिन जब था मुंडेरे पर खड़ा – ....

    (ख) लाल होकर आँख भी दुखने लगी – ....

    (ग) ऐंठ बेचारी दबे पाँवों भागी– ....

    (घ) जब किसी ढब से निकल तिनका गया– ....

2. 'एक तिनका' कविता में किस घटना की चर्चा की गई है, जिससे घमंड नहीं करने का संदेश मिलता है ?

3. आँख में तिनका पड़ने के बाद घमंडी की क्या दशा हुई ?

4. घमंडी की आँख से तिनका निकालने के लिए उसके आसपास लोगों ने क्या किया?

5. 'एक तिनका' कविता में घमंडी को उसकी 'समझ' ने चेतावनी दी–

    ऐंठता तू किसलिए इतना रहा,
    एक तिनका है बहुत तेरे लिए।

    इसी प्रकार की चेतावनी कबीर ने भी दी है –

    तिनका कबहूँ न निंदिए, पाँव तले जो होय।
    कबहूँ उड़ि आँखिन परै, पीर घनेरी होय।।

    इन दोनों में क्या समानता है और कया अंतर ? लिखिए।

अनुमान और कल्पना

1. इस कविता को कवि ने 'मैं' से आरंभ किया है– 'मैं घमंडों में भरा ऐंठा हुआ कवि का यह 'मैं' कविता पढ़नेवाले व्यक्ति से भी जुड़ सकता है और तब अनुभव यह होगा कि कविता पढ़नेवाला व्यक्ति अपनी बात बता रहा है। यदि कविता में 'मैं' की जगह 'वह' या कोई नाम लिख दिया जाए, तब कविता के वाक्यों में बदलाव आ जाएगा। कविता में 'मैं' के स्थान पर 'वह' या कोई नाम लिखकर वाक्यों के बदलाव को देखिए और कक्षा में पढ़कर सुनाइए।
2. नीचे दी गई पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए–

   ऐंठ बेचारी दबे पाँवों भागी,
   तब 'समझ' ने यों मुझे ताने दिए।

   इन पंक्तियों में 'ऐंठ' और 'समझ' शब्दों का प्रयोग सजीव प्राणी की भाँति हुआ है। कल्पना कीजिए, यदि 'ऐंठ' और 'समझ' किसी नाटक में दो पात्र होते तो उनका अभिनय कैसा होता ?
3. नीचे दी गई कबीर की पंक्तियों में तिनका शब्द का प्रयोग एक से अधिक बार किया गया है। इनके अलग–अलग अर्थों की जानकारी प्राप्त करें।

   उठा बबूला प्रेम का, तिनका उड़ा अकास।
   तिनका–तिनका हो गया, तिनका तिनके पास।।

भाषा की बात

'किसी ढब से निकलना' का अर्थ है किसी ढंग से निकलना। 'ढब से' जैसे कई वाक्यांशों से आप परिचित होंगे, जैसे–धम से वाक्यांश है लेकिन ध्वनियों में समानता होने के बाद भी ढब से और धम से जैसे वाक्यांशों के प्रयोग में अंतर है। 'धम से', 'धप से' इत्यादि का प्रयोग ध्वनि द्वारा क्रिया को सूचित करने के लिए

किया जाता है। नीचे कुछ ध्वनि द्वारा क्रिया को सूचित करने वाले वाक्यांश और कुछ अधूरे वाक्य दिए गए हैं। उचित वाक्यांश चुनकर वाक्यों के खाली स्थान भरिए–

छप से, टप से, थर्र से, फुर्र से, सन् से

(क) मेंढक पानी में .... कूद गया।

(ख) नल बंद होने के बाद पानी की एक बूँद .... चू गई।

(ग) शोर होते ही चिड़िया .... उड़ी।

(घ) ठंडी हवा .... गुज़री, मैं ठंड में .... काँप गया।

नीलकंठ

उस दिन एक अतिथि को स्टेशन पहुँचाकर मैं लौट रही थी कि चिड़ियों और खरगोशों की दुकान का ध्यान आ गया और मैंने ड्राइवर को उसी ओर चलने का आदेश दिया बड़े मियाँ चिड़ियावाले की दुकान के निकट पहुँचते ही उन्होंने सड़क पर आकर ड्राइवर को रुकने का संकेत दिया। मेरे कोई प्रश्न करने के पहले ही उन्होंने कहना आरंभ किया, "सलाम गुरु जी! पिछली बार आने पर आपने मोर के बच्चों के लिए पूछा था। शंकरगढ़ से एक चिड़ीमार दो मोर के बच्चे पकड़ लाया है, एक मोर है, एक मोरनी। आप पाल लें। मोर के पंजों से दवा बनती है, सो ऐसे ही लोग खरीदने आए थे। आखिर मेरे सीने में भी तो इन्सान का दिल है। मारने के लिए ऐसी मासूम–चिड़ियों को कैसे दूँ! टालने के लिए मैंने कह दिया– 'गुरु जी ने मँगवाए हैं।' वैसे यह कमबख्त रोज़गार ही खराब है। बस, पकड़ो–पकड़ो, मारो–मारो।" बड़े मियाँ के भाषण की तूफानमेल के लिए कोई निश्चित स्टेशन नहीं है। सुननेवाला थककर जहाँ रोक दे वहीं स्टेशन मान लिया जाता है। इस तथ्य से परिचित होने के कारण ही मैंने बीच में उन्हें रोककर पूछा, "मोर के बच्चे हैं कहाँ?" बड़े मियाँ के हाथ के संकेत का अनुसरण करते हुए मेरी दृष्टि एक तार के छोटे–से पिंजड़े तक पहुँची जिसमें तीतरों के समान दो बच्चे बैठे थे। पिंजड़ा इतना संकीर्ण था कि वे पक्षी – शावक जाली के गोल फ्रेम में किसी जड़े चित्र जैसे लग रहे थे। मेरे निरीक्षण के साथ–साथ बड़े मियाँ की भाषण–मेल चली जा रही थी, "ईमान कसम, गुरु जी–चिड़ीमार ने मुझसे इस मोर के जोड़े के नकद तीस रुपये लिए हैं। बारहा कहा, भई ज़रा सोच तो, अभी इनमें मोर की कोई खासियत भी है कि तू इतनी बड़ी कीमत ही माँगने चला। पर वह मूँजी क्यों सुनने लगा। आपका खयाल करके अछता–पछताकर देना ही पड़ा।

अब आप जो मुनासिब समझें।" अस्तु, तीस चिड़ीमार के नाम के और पाँच बड़े मियाँ के ईमान के देकर जब मैंने वह छोटा पिंजड़ा कार में रखा तब मानो वह जाली के चौखटे का चित्र जीवित हो गया। दोनों पक्षी–शावकों के छटपटाने से लगता था मानो पिंजड़ा ही सजीव और उड़ने योग्य हो गया है।

घर पहुँचने पर सब कहने लगे, "तीतर हैं, मोर कहकर ठग लिया है।"

कदाचित अनेक बार ठगे जाने के कारण ही ठगे जाने की बात मेरे चिढ़ जाने की दुर्बलता बन गई है। अप्रसन्न होकर मैंने कहा, "मोर के क्या सुरखाब के पर लगे हैं। है तो पक्षी ही।" चिढ़ा दिया जाने के कारण ही संभवतः उन दोनों पक्षियों के प्रति मेरे व्यवहार और यत्न में कुछ विशेषता आ गई।

पहले अपने पढ़ने–लिखने के कमरे में उनका पिंजड़ा रखकर उसका दरवाज़ा खोला, फिर दो कटोरों में सत्तू की छोटी–छोटी गोलियाँ और पानी रखा। वे दोनों चूहेदानी जैसे पिंजड़े से निकलकर कमरे में मानो खो गए, कभी मेज़ के नीचे घुस गए, कभी अलमारी के पीछे। अंत में इस लुकाछिपी से थककर उन्होंने मेरे रद्दी कागज़ों की टोकरी को अपने नए बसेरे का गौरव प्रदान किया। दो–चार दिन वे इसी प्रकार दिन में इधर–उधर गुप्तवास करते और रात में रद्दी की टोकरी में प्रकट होते रहे। फिर आश्वस्त हो जाने पर कभी मेरी मेज़ पर, कभी कुरसी पर और कभी मेरे सिर पर अचानक आविर्भूत होने लगे। खिड़कियों में तो जाली लगी थी, पर दरवाज़ा मुझे निरंतर बंद रखना पड़ता था। खुला रहने पर चित्रा (मेरी बिल्ली) इन नवागतुकों का पता लगा सकती थी और तब उसके शोध का क्या परिणाम होता, यह अनुमान करना कठिन नहीं है। वैसे वह चूहों पर भी आक्रमण नहीं करती, परंतु यहाँ तो दो सर्वथा अपरिचित पक्षियों की अनाधिकार चेष्टा का प्रश्न था। उसके लिए दरवाज़ा बंद रहे और ये दोनों (उसकी दृष्टि में) ऐरे–गैरे मेरी मेज़ को अपना सिंहासन बना लें, यह स्थिति चित्रा जैसी अभिमानिनी मार्जारी के लिए असह्य ही कही जाएगी। जब मेरे

कमरे का कायाकल्प चिड़ियाखाने के रूप में होने लगा, तब मैंने बड़ी कठिनाई दोनों चिड़ियों को पकड़कर जाली के बड़े घर में पहुँचाया जो मेरे जीव–जंतुओं का सामान्य निवास है।

दोनों नवागंतुकों ने पहले से रहनेवालों में वैसा ही कुतूहल जगाया जैसा नववधू के आगमन पर परिवार में स्वाभाविक है। लक्का कबूतर नाचना छोड़कर दौड़ पड़े और उनके चारों ओर घूम–घूमकर गुटरगूँ–गुटरगूँ की रागिनी अलापने लगे। बड़े खरगोश सभ्य सभासदों के समान क्रम से बैठकर गंभीर भास से उनका निरीक्षण करने लगें ऊन की गेंद जैसे छोटे खरगोश उनके चारों ओर उछलकूद मचाने लगे। तोते मानो भलीभाँति देखने के लिए एक आँख बंद करके उनका परीक्षण करने लगे। उस दिन मेरे चिड़ियाघर में मानो भूचाल आ गया।

धीरे–धीरे दोनों मोर के बच्चे बढ़ने लगे। उनका कायाकल्प वैसा ही क्रमशः और रंगमय था जैसा इल्ली से तितली का बनना।

मोर के सिर की कलगी और सघन, ऊँची तथा चमकीली हो गई चोंच अधिक बंकिम और पैनी हो गई, गोल आँखों में इंद्रनी की नीलाभ द्युति झलकने लगी। लंबी नील–हरित ग्रीवा की हर भंगिमा में धूपछाँही तरंगे उठने–गिरने लगीं। दक्षिण–वाम दोनों पंखों में सलेटी और सफेद आलेखन स्पष्ट होने लगे। पूँछ लंबी हुई और उसके पंखों पर चंद्रिकाओं के इंद्रधनुषी रंग उद्दीप्त हो उठे। रंग–रहित पैरों को गरवीली गति ने एक नयी गरिमा से रंजित कर दिया। उसका गरदन ऊँची कर देखना, विशेष भंगिमा के साथ उसे नीची कर दाना चुगना, पानी पीना, टेढ़ी कर शब्द सुनना आदि क्रियाओं में जो सुकुमारता और सौंदर्य था, उसका अनुभव देखकर ही किया जा सकता है। गति का चित्र नहीं आँका जा सकता।

मोरनी का विकास मोर के समान चमत्कारिक तो नहीं हुआ–परंतु अपनी लंबी धूपछाँही गरदन, हवा में चंचल कलगी, पंखों की श्याम–श्वेत पत्रलेखा, मंथर गति

आदि से वह भी मोर की उपयुक्त सहचारिणी होने का प्रमाण देने लगी।

नीलाभ ग्रीवा के कारण मोर का नाम रखा गया नीलकंठ और उसकी छाया के समान रहने के कारण मोरनी का नामकरण हुआ राधा। मुझे स्वयं ज्ञात नहीं कि कब नीलकंठ ने अपने आपको चिड़ियाघर के निवासी जीव–जंतुओं का सेनापति और संरक्षक नियुक्त कर लिया। सवेरे ही वह सब खरगोश, कबूतर आदि की सेना एकत्र कर उस ओर ले जाता जहाँ दाना दिया जाता है और घूम–घूमकर मानो सबकी रखवाली करता रहता । किसी ने कुछ गड़बड़ की और वह अपने तीखे चंचु–प्रहार से उसे दंड देने दौड़ा। खरगोश के छोटे बच्चों को वह चोंच से उनके कान पकड़कर ऊपर उठा लेता था और जब तक वे आर्तक्रंदन न करने लगते उन्हें अधर में लटकाए रखता। कभी–कभी उसकी पैनी चोंच से खरगोश के बच्चों का कर्णवेध संस्कार हो जाता था, पर वे फिर कभी उसे क्रोधित होने का अवसर न देते थे। दंडविधान के समान ही उन जीव–जंतुओं के प्रति उसका प्रेम भी असाधारण था। प्रायः वह मिट्टी में पंख फैलाकर बैठ जाता और वे सब उसकी लंबी पूँछ और सघन पंखों में छुआ–छुऔअल–सा खेलते रहते थे।

ऐसी ही किसी स्थिति में एक साँप जाली के भीतर पहुँच गया। सब जीव–जंतु भागकर इधर–उधर छिप गए, केवल एक शिशु खरगोश साँप की पकड़ में आ गया। निगलने के प्रयास में साँप ने उसका आधा पिछला शरीर तो मुँह में दबा रखा था, शेष आधा जो बाहर था, उससे चीं–चीं का स्वर भी इतना तीव्र नहीं निकल सकता था कि किसी को स्पष्ट सुनाई दे सके। नीलकंठ दूर ऊपर झूले में सो रहा था। उसी के चौकन्ने कानों ने उस मंद स्वर की व्यथा पहचानी और वह पूँछ–पंख समेटकर सर से एक झपट्टे में नीचे आ गया संभवतः अपनी सहज चेतना से ही उसने समझ लिया होगा कि साँप के फन पर चोंच मारने से खरगोश भी घायल हो सकता है।

उसने साँप को फन के पास पंजों से दबाया और फिर चोंच से इतने प्रहार

किए कि वह अधमरा हो गया। पकड़ ढीली पड़ते ही खरगोश का बच्चा मुख से निकल तो आया, परंतु निश्चेष्ट–सा वहीं पड़ा रहा।

राधा ने सहायता देने की आवश्यकता नहीं समझी, परंतु अपनी मंद केका से किसी असामान्य घटना की सूचना सब ओर प्रसारित कर दी। माली पहुँचा, फिर हम सब पहुँचे। नीलकंठ जब साँप के दो खंड कर चुका, तब उस शिशु खरगोश के पास गया और रातभर उसे पंखों के नीचे रखे उष्णता देता रहा। कार्तिकेय ने अपने युद्ध–वाहन के लिए मयूर को क्यों चुना होगा, यह उस पक्षी का रूप और स्वभाव देखकर समझ में आ जाता है।

मयूर कलाप्रिय वीर पक्षी है, हिंसक मात्र नहीं। इसी से उसे बाज़, चील आदि की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता, जिनका जीवन ही क्रूर कर्म है।

नीलकंठ में उसकी जातिगत विशेषताएँ तो थीं ही, उनका मानवीकरण भी हो गया था मेघों की साँवली छाया में अपने इंद्रधनुष के गुच्छे जैसे पंखों को मंडलाकार बनाकर जब वह नाचता था, तब उस नृत्य में एक सहजात लय–ताल रहता था आगे–पीछे, दाहिने–बाएँ क्रम से घूमकर वह किसी अलक्ष्य सम पर ठहर–ठहर जाता था।

राधा नीलकंठ के समान नहीं नाच सकती थी, परंतु उसकी गति में भी एक छंद रहता था वह नृत्यमग्न नीलकंठ की दाहिनी ओर के पंख को छूती हुई बाईं ओर निकल आती थी और बाएँ पंख को स्पर्श कर दाहिनी ओर। इस प्रकार उसकी परिक्रमा में भी एक पूरक ताल–परिचय मिलता था। नीलकंठ ने कैसे समझ लिया कि उसका नृत्य मुझे बहुत भाता है, यह तो नहीं बताया जा सकता, परंतु अचानक एक दिन वह मेरे जालीघर के पास पहुँचते ही अपने झूले से उतरकर नीचे आ गया और पंखों का सतरंगी मंडलाकर छाता तानकर नृत्य की भंगिमा में खड़ा हो गया। तब से यह नृत्य–भंगिमा नित्य का क्रम बन गई। प्रायः मेरे साथ कोई–न–कोई

देशी–विदेशी अतिथि भी पहुँच जाता था और नीलकंठ की मुद्रा को अपने प्रति सम्मानपूर्वक समझकर विस्मयाभिभूत हो उठता था। कई विदेशी महिलाओं ने उसे 'परफैक्ट जेंटिलमैन' की उपाधि दे डाली। जिस नुकीली पैनी चोंच से वह भयंकर विषधर को खंड–खंड कर सकता था, उसी से मेरी हथेली पर रखे हुए भुने चने ऐसी कोमलता से हौले–हौले उठाकर खाता था कि हँसी भी आती थी और विस्मय भी होता था। फलों के वृक्षों से अधिक उसे पुष्पित और पल्लवित वृक्ष भाते थे।

वंसत में जब आम के वृक्ष सुनहली मंजरियों से लद जाते थे, अशोक नए लाल पल्लवों से ढँक जाता था, तब जालीघर में वह इतना अस्थिर हो उठता कि उसे बाहर छोड़ देना पड़ता। नीलकंठ और राधा की सबसे प्रिय ऋतु तो वर्षा ही थी। मेघों के उमड़ आने से पहले ही वे हवा में उसकी सजल आहट पा लेते थे और तब उनकी मंद केका की गूँज–अनुगूँज तीव्र से तीव्रतर होती हुई मानो बूँदों के उतरने के लिए सोपान–पंक्ति बनने लगती थी। मेघ जितना अधिक गरजता, बिजली जितनी अधिक चमकती, बूँदों की रिमझिमाहट जितनी तीव्र होती जाती, नीलकंठ के नृत्य का वेग उतना ही अधिक बढ़ता जाता और उसकी केका का स्वर उतना ही मंद्र से मंद्रतर होता जाता। वर्षा के थम जाने पर वह दाहिने पंजे पर दाहिना पंख और बाएँ पर बायाँ पंख फैलाकर सुखाता। कभी–कभी वे दोनों एक–दूसरे के पंखों से टपकनेवाली बूँदों को चोंच से पी–पीकर पंखों का गीलापन दूर करते रहते। इस आनंदोत्सव की रागिनी में बेमेल स्वर कैसे बज उठा, यह भी एक करुण कथा है

एक दिन मुझे किसी कार्य से नखासकोने से निकलना पड़ा और बड़े मियाँ ने पहले के समान कार को रोक लिया। इस बार किसी पिंजड़े की ओर नहीं देखूँगी, यह संकल्प करके मैंने बड़े मियाँ की विरल दाढ़ी और सफेद डोरे से कान में बंधी ऐनक को ही अपने ध्यान का केंद्र बनाया। पर बड़े मियाँ के पैरों के पास जो मोरनी पड़ी थी उसे अनदेखा करना कठिन था। मोरनी राधा के समान ही थी। उसके मूँज से बँधे

दोनों पंजों की उँगलियाँ टूटकर इस प्रकार एकत्रित हो गई थीं कि वह खड़ी ही नहीं हो सकती थी।

बड़े मियाँ की भाषण–मेल फिर दौड़ने लगी – "देखिए गुरु जी, कमबख्त चिड़ीमार ने बेचारी का क्या हाल किया है। ऐसे कभी चिड़िया पकड़ी जाती है! आप न आई होतीं तो मैं उसी के सिर पर इसे पटक देता। पर आपसे भी यह अधमरी मोरनी ले जाने को कैसे कहूँ!"

सारांश यह कि सात रुपये देकर मैं उसे अगली सीट पर रखवाकर घर ले आई और एक बार फिर मेरे पढ़ने–लिखने का कमरा अस्पताल बना। पंजों की मरहमपट्टी और देखभाल करने पर वह महीनेभर में अच्छी हो गई। उँगलियाँ वैसी ही टेढ़ी–मेढ़ी रहीं, परंतु वह ठूँठ जैसे पंजों पर डगमगाती हुई चलने लगी। तब उसे जालीघर में पहुँचाया गया और नाम रखा गया– कुब्जा। नाम के अनुरूप वह स्वभाव से भी कुब्जा ही प्रमाणित हुई। अब तक नीलकंठ और राधा साथ रहते थे। अब कुब्जा उन्हें साथ देखते ही मारने दौड़तीं चोंच से मार–मारकर उसने राधा की कलगी नोच डाली, पंख नोच डाले। कठिनाई यह थी कि नीलकंठ उससे दूर भागता था और वह उसके साथ रहना चाहती थी। न किसी जीव–जंतु से उसकी मित्रता थी, न वह किसी को नीलकंठ के समीप आने देना चाहती थी। उसी बीच राधा ने दो अंडे दिए, जिनको वह पंखों में छिपाए बैठी रहती थी। पता चलते ही कुब्जा ने चोंच मार–मारकर राधा को ढकेल दिया और फिर अंडे फोड़कर ठूँठ जैसे पैरों से सब ओर छितरा दिए।

इस कलह–कोलाहल से और उससे भी अधिक राधा की दूरी से बेचारे नीलकंठ की प्रसन्नता का अंत हो गया।

कई बार वह जाली के घर से निकल भागा। एक बार कई दिन भूखा–प्यासा आम की शाखाओं में छिपा बैठा रहा, जहाँ से बहुत पुचकारकर मैंने उतारा। एक बार

मेरी खिड़की के शेड पर छिपा रहा।

मेरे दाना देने जाने पर वह सदा की भाँति पंखों को मंडलाकार बनाकर खड़ा हो जाता था, पर उसकी चाल में थकावट और आँखों में एक शून्यता रहती थी। अपनी अनुभवहीनता के कारण ही मैं आशा करती रही कि थोड़े दिन बाद सबमें मेल हो जाएगा। अंत में तीन–चार मास के उपरांत एक दिन सवेरे जाकर देखा कि नीलकंठ पूँछ–पंख फैलाए धरती पर उसी प्रकार बैठा हुआ है, जैसे खरगोश के बच्चों को पंखों में छिपाकर बैठता था मेरे पुकारने पर भी उसके न उठने पर संदेह हुआ।

वास्तव में नीलकंठ मर गया था 'क्यों' का उत्तर तो अब तक नहीं मिल सका है। न उसे कोई बीमारी हुई, न उसके रंग–बिरंगे फूलों के स्तबक जैसे शरीर पर किसी चोट का चिह्न मिला। मैं अपने शाल में लपेटकर उसे संगम ले गई। जब गंगा की बीच धार में उसे प्रवाहित किया गया, तब उसके पंखों की चंद्रिकाओं से बिंबित–प्रतिबिंबित होकर गंगा का चौड़ा पाट एक विशाल मयूर के समान तरंगित हो उठा। नीलकंठ के न रहने पर राधा तो निश्चेष्ट–सी कई दिन कोने में बैठी रही। वह कई बार भागकर लौट आया था, अतः वह प्रतीक्षा के भाव से द्वार पर दृष्टि लगाए रहती थी। पर कुब्जा ने कोलाहल के साथ खोज–ढूँढ़ आरंभ की। खोज के क्रम में वह प्रायः जाली का दरवाज़ा खुलते ही बाहर निकल आती थी और आम, अशोक, कचनार आदि की शाखाओं में नीलकंठ को ढूँढती रहती थी। एक दिन आम से उतरी ही थी कि कजली (अल्सेशियन कुत्ती) सामने पड़ गई। स्वभाव के अनुसार उसने कजली पर भी चोंच से प्रहार किया। परिणामतः कजली के दो दाँत उसकी गरदन पर लग गए। इस बार उसका कलह–कोलाहल और द्वेष–प्रेम भरा जीवन बचाया न जा सका। परंतु इन तीन पक्षियों ने मुझे पक्षी–प्रकृति की विभिन्नता का जो परिचय दिया है, वह मेरे लिए विशेष महत्त्व रखता हे।

राधा अब प्रतीक्षा में ही दुकेली है। आषाढ़ में जब आकाश मेघाच्छन्न हो जाता

है तब वह कभी ऊँचे झूले पर और कभी अशोक की डाल पर अपनी केका को तीव्रतर करके नीलकंठ को बुलाती रहती है।

– महादेवी वर्मा

प्रश्न –अभ्यास

निबंध से

1. मोर–मोरनी के नाम किस आधार पर रखे गए ?
2. जाली के बड़े घर में पहुँचने पर मोर के बच्चों का किस प्रकार स्वागत हुआ ?
3. लेखिका को नीलकंठ की कौन–कौन सी चेष्टाएँ बहुत भाती थीं ?
4. 'इस आनंदोत्सव की रागिनी में बेमेल स्वर कैसे बज उठा' – वाक्य किस घटना की ओर संकेत कर रहा है ?
5. वसंत ऋतु में नीलकंठ के लिए जालीघर में बंद रहना असहनीय क्यों हो जाता था?
6. जालीघर में रहनेवाले सभी जीव एक–दूसरे के मित्र बन गए थे, पर कुब्जा के साथ ऐसा संभव क्यों नहीं हो पाया ?
7. नीलकंठ ने खरगोश के बच्चे को साँप से किस तरह बचाया ? इस घटना के आधार पर नीलकंठ के स्वभाव की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ।

निबंध से आगे

1. यह पाठ एक 'रेखाचित्र' है। रेखाचित्र की क्या–क्या विशेषताएँ होती हैं ? जानकारी प्राप्त कीजिए और लेखिका के लिखे किसी अन्य रेखाचित्र को पढ़िए।
2. वर्षा ऋतु में जब आकाश में बादल घिर आते हैं तब मोर पंख फैलाकर धीरे–धीरे

मचलने लगता है– यह मोहक दृश्य देखने का प्रयास कीजिए।

3. पुस्तकालय से एक सी कहानियों, कविताओं या गीतों को खोजकर पढ़िए जो वर्षा ऋतु और मोर के नाचने से संबंधित हों।

अनुमान और कल्पना

1. निबंध में आपने ये पंक्तिया पढ़ी हैं – 'मैं अपने शाल में लपेटकर उसे संगम ले गई। जब गंगा की बीच धार में उसे प्रवाहित किया गया तब उसके पंखों की चंद्रिकाओं से बिंबित–प्रतिबिंबित होकर गंगा का चौड़ा पाट एक विशाल मयूर के समान तरंगित हो उठा।' इन पंक्तियों में एक भावचित्र है। इसके आधार पर कल्पना कीजिए और लिखिए कि मोरपंख की चंद्रिका और गंगा की लहरों में क्या–क्या समानताएं लेखिका ने देखी होंगी जिसके कारण गंगा का चौड़ा पाट एक विशाल मयूर पंख के समान तरंगित हो उठा।
2. नीलकंठ की नृत्य–भंगिमा का शब्दचित्र प्रस्तुत करें।

भाषा की बात

1. 'रूप' शब्द से कुरूप, स्वरूप, बहुरूप आदि शब्द बनते हैं। इसी प्रकार नीचे लिखे शब्दों से अन्य शब्द बनाओ –

   गंध रंग फल ज्ञान
2. विस्मयाभिभूत शब्द विस्मय और अभिभूत दो शब्दों के योग से बना है। इसमें विस्मय के य के साथ अभिभूत के अ के मिलने से या हो गया है। अ आदि वर्ण हैं। ये सभी वर्ण–ध्वनियों में व्याप्त हैं। व्यंजन वर्णों में इसके योग को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जैसे – क्+अ : क इत्यादि। अ की मात्रा के चिह्न (ा) से आप परिचित हैं। अ की भाँति किसी शब्द में आ के भी जुड़ने से अकार की मात्रा ही

लगती है, जैसे–मंडल+आकार : मंडलाकार। मंडल और आकार की संधि करने पर (जोड़ने पर) मंडलाकार शब्द बनता है और मंडलाकार शब्द का विग्रह करने पर (तोड़ने पर) मंडल और आकार दोनों अलग होते हैं। नीचे दिए गए शब्दों के संधि–विग्रह कीजिए –

संधि		विग्रह	
नील + आभ	....	सिंहासन	....
नव + आगंतुक	....	मेघाच्छन्न	....

कुछ करने को

चयनित व्यक्ति/पशु/पक्षी की खास बातों को ध्यान में रखते हुए एक रेखाचित्र बनाइए।

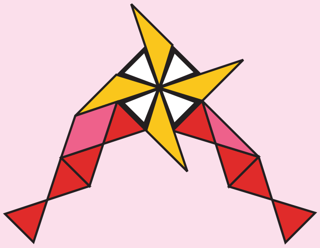

भोर और बरखा

जागो बंसीवारे ललना!
जागो मोरे प्यारे!
रजनी बीती, भोर भयो है, घर–घर खुले किंवारे।
गोपी दही मथत, सुनियत हैं कंगना के झनकारे।।

उठो लालजी! भोर भयो है, सुर–नर ठाढ़े द्वारे।
ग्वाल–बाल सब करत कुलाहल, जय–जय सबद उचारै।।

माखन–रोटी हाथ मँह लीनी, गउवन के रखवारे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सरण आयाँ को तारै।।

बरसे बदरिया सावन की।
सावन की, मन–भावन की।।

सावन में उमग्यो मेरो मनवा, भनक सुनी हरि आवन की।
उमड़–घुमड़ चहुँदिस से आया, दामिन दमकै झर लावन की।।

नन्हीं–नन्हीं बूँदन मेहा बरसे, शीतल पवन सुहावन की।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर! आनंद–मंगल गावन की।।

– मीरा बाई

प्रश्न –अभ्यास

कविता से

1. 'बंसीवारे ललना', 'मोरे प्यारे', 'लाल जी' कहते हुए यशोदा किसे जगाने का प्रयास करती हैं और वे कौन–कौन सी बातें कहती हैं ?
2. नीचे दी गई पंक्ति का आशय अपने शब्दों में लिखिए – 'माखन–रोटी हाथ मँह लीनी, गउवन के रखवारे।'
3. पढ़े हुए पद के आधार पर ब्रज की भोर का वर्णन कीजिए।
4. मीरा को सावन मनभावन क्यों लगने लगा ?
5. पाठ के आधार पर सावन की विशेषताएँ लिखिए।

कविता से आगे

1. मीरा भक्तिकाल की प्रसिद्ध कवयित्री थीं। इस काल के दूसरे कवियों के नामों की सूची बनाइए तथा उनकी एक–एक रचना का नाम लिखिए।
2. सावन वर्षा ऋतु का महीना है, वर्षा ऋतु से संबंधित दो अन्य महीनों के नाम लिखिए।

अनुमान और कल्पना

1. सुबह जगने के समय आपको क्या अच्छा लगता है?
2. यदि आपको अपने छोटे भाई–बहन को जगाना पड़े, तो कैसे जगाएँगे?
3. वर्षा में भीगना और खेलना आपको कैसा लगता है ?
4. मीरा बाई ने सुबह का चित्र खींचा है। अपनी कल्पना और अनुमान से लिखिए कि

नीचे दिए गए स्थानों की सुबह कैसी होती है –

(क) गाँव, गली या मुहल्ले में

(ख) रेलवे प्लेटफॉर्म पर

(ग) नदी या समुद्र के किनारे

(घ) पहाड़ों पर

भाषा की बात

1. कृष्ण को 'गउवन के रखवारे' कहा गया है जिसका अर्थ है गौओं का पालन करनेवाले। इसके लिए एक शब्द दें।
2. नीचे दो पंक्तियाँ दी गई हैं। इनमें से पहली पंक्ति में रेखांकित शब्द दो बार आए हैं, और दूसरी पंक्ति में भी दो बार। इन्हें पुनरुक्ति (पुनः उक्ति) कहते है। पहली पंक्ति में रेखांकित शब्द विशेषण हैं और दूसरी पंक्ति में संज्ञा।

   'नन्हीं–नन्हीं बूँदन मेहा बरसे'

   'घर–घर खुले किंवारे'

   ठस प्रकार के दो–दो उदाहरण खोजकर वाक्य में प्रयोग कीजिए और देखिए कि विशेषण तथा संज्ञा की पुनरुक्ति के अर्थ में क्या अंतर है ? जैसे–मीठी–मीठी बातें, फूल–फूल महके।

कुछ करने को

कृष्ण को 'गिरधर' क्यों कहा जाता है ? इसके पीछे कौन सी कथा है ? पता कीजिए और कक्षा में बताइए।

और भी दूँ

मन समर्पित, तन समर्पित,
और यह जीवन समर्पित,
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे और भी दूँ।

माँ तुम्हारा ऋण बहुत है, मैं अकिंचन,
किन्तु इतना कर रहा, फिर भी निवेदन–
थाल में लाऊँ सजाकर भाल जब भी,
कर दया स्वीकार लेना वह समर्पण,
गान अर्पित, प्राण अर्पित,
रक्त का कण–कण समर्पित,
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे और भी दूँ।

माँज दो तलवार को लाओ न देरी,
बाँध दो कसकर, कमर पर ढाल मेरी;
भाल पर मल दो, चरण की धूल थोड़ी,
शीश पर आशीष की छाया घनेरी,
स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित
आयु का क्षण–क्षण समर्पित
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे और भी दूँ।

तोड़ता हूँ, मोह का बंधन क्षमा दो,
गाँव मेरे, द्वार–घर, आँगन, क्षमा दो,
आज सीधे हाथ में तलवार दे दो,
और बाएँ हाथ में ध्वज को थमा दो।

ये सुमन लो, यह चमन लो,
नीड़ का तृण–तृण समर्पित,
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे और भी दूँ।

– रामावतार त्यागी

प्रश्न–अभ्यास

बोध और सराहना

1. कवि ने इस कविता में क्या–क्या समर्पित करने की बात कही है?
2. सर्वस्व समर्पण के बाद भी कवि क्यों संतुष्ट नहीं है ?
3. थाल में लाऊँ सजाकर भाल जब भी,
   कर दया स्वीकार लेना वह समर्पण
   "थाल में भाल सजाने" से कवि का क्या तात्पर्य है ? स्पष्ट करें।
4. "गान अर्पित" और "स्वप्न अर्पित" से क्या आशय है ?
5. भाव स्पष्ट करें –
   (क) शीश पर आशीष की छाया घनेरी।
   (ख) नीड़ का तृण–तृण समर्पित।
6. प्रस्तुत कविता का मुख्य भाव क्या है ? सही चुनाव करें –
   (क) तयाग–बलिदान की चाह
   (ख) धरती का मोह
   (ग) देश की महानता का गुणगान
   (घ) देशवासियों की प्रशंसा
7. कविता में व्यक्त कवि की भावना को एक वाक्य में लिखें।

योग्यता–विस्तार

1. इस कविता को कंठस्थ करके कक्षा में सुनाएँ।
   (यह एक गीत है। गीत का प्रभावशाली सस्वर पाठ करने के लिए आवश्यक है कि "टेक" का एकाधिक बार पर्याप्त आरोह–अवरोह, गति–विराम और बलाघात के साथ वाचन किया जाए)
2. देश–प्रेम की कविताओं का संकलन करें और जो कविता आपको सबसे अच्छी लगती है, उसे अपने साथियों को सुनाएँ।

जम्मू–कश्मीर की झीलें

जम्मू–कश्मीर राज्य प्राकृतिक सौंदर्य के लिए विश्व–भर में प्रसिद्ध है। यहाँ कहीं घने–घने वन हैं तो कहीं कल–कल करती नदियाँ। कहीं धरती से प्रस्फुटित होते सुंदर सोते (चश्मे) हैं, तो कहीं मीठे पानी की सुंदर झीलें।

भूगोल–शस्त्रियों का मत है कि कश्मीर घाटी पहले एक विशाल झील थी। एक बार भयानक भूचाल आया, जिसमें बारामूला के पास पहाड़ का एक भाग टूटकर ढह गया तथा झील का पानी बह निकला।

एक पौराणिक कथा के अनुसार इस विशाल झील का नाम 'सतीसर' था। कश्यप ऋषि ने भगवान विष्णु से प्रार्थना की, जिसके फलस्वरूप बारामूला के पास पहाड़ टूट गया। इस प्रकार झील का पानी बह गया। फिर कश्यप ऋषि ने इस घाटी को बसाया। उन्हीं के नाम पर ही इस घाटी का नाम 'कश्मीर' पड़ा।

कश्मीर में बहुत सी झीलें हैं। इनमें वुलर झील सबसे बड़ी है। यह झील भारतवर्ष में ताज़ा और मीठे पानी की सबसे बड़ी और गहरी झील है। यह झील लगभग सोलह किलोमीटर लंबी और दस किलोमीटर चौड़ी है। यह झील श्रीनगर से पचहत्तर किलोमीटर की दूरी पर बाँडीपुर और सोपुर के मध्य में स्थित है। वुलर झील में वितस्ता (झेलम) नदी दक्षिण–पूर्व से प्रवेश करती है और पश्चिम से निकलती है। इसमें बड़ी मात्रा में भिन्न–भिन्न प्रकार की मछलियाँ पाई जाती हैं जो कि हज़ारों मछुओं की आजीविका का साधन है। इससे भी झील में किनारे–किनारे सिंघाड़े और नदरू (कमलनाल) की खेती की जाती है। इससे भी हज़ारों लोगों को रोज़ी –रोटी उपलब्ध होती है। वुलर झील को देखने तथा इनमें नौका–विहार के लिए हर वर्ष हज़ारों पर्यटक आते हैं।

वुलर की तरह डल झील भी एक प्रसिद्ध झील है। यह झील श्रीनगर में है।

इसकी लंबाई लगभग आठ किलोमीटर और चौड़ाई छः किलोमीटर है। नगीन झील भी इसी का एक भाग है। इसके किनारे चश्माशाही, निशात, शालीमार आदि प्रसिद्ध मुगलबाग स्थित हैं। झील में कहीं तो पर्यटक शिकारों में सैर का आनंद लेते हैं तो कहीं हाऊसबोटों में रहने का अद्भुत अनुभव प्राप्त करते हैं। कहीं मोटर–नौकाएँ, कहीं तैरते खेत और कहीं फल–फूलों व सब्ज़ियों से लदे शिकारे देखकर मन झूम उठता है। इस झील में दो द्वीप (टापू) हैं, जो 'रोपलाँक' (रजतद्वीप) और स्वानलाँक (स्वर्ण द्वीप) नामों से जाने जाते हैं। रोपलाँक अब 'चार–चिनारी' नाम से भी प्रसिद्ध है। इन द्वीपों के अतिरिक्त डलझील में एक कृत्रिम टापू–उद्यान भी है जो 'नेहरू पार्क' कहलाता है। यह डलझील की सुंदरता में चार चाँद लगा देता है।

कश्मीर–घाटी में इन दो बड़ी झीलों के अतिरिक्त कई और झीलें भी हैं। 'आँचार' और 'मानसबल' मैदानी झीलें हैं जबकि 'गंगबल', 'आलपथर', 'नील नाग', 'कौंसर नाग', 'तुलियन', 'तारसर', 'मारसर', शेषनाग' आदि हिमानियों (ग्लेशियरों) से बनी पहाड़ी झीलें हैं। इनकी प्राकृतिक छटा देखते ही बनती है।

अमरनाथ के रास्ते में शेषनाग नामक सुन्दर झील है। इसका दूधिया पानी तथा ग्लेशियर से सजी पर्वत श्रृंखला का दृश्य बड़ा ही मनमोहक है। प्रसिद्ध कौंसर नाग झील तो चिनार के पत्ते के आकार की दिखाई देती है।

श्रीनगर से लगभग तीस किलोमीटर दूर मानसबल झील है, जोकि निर्मल और बहुत गहरी है। यह झील नौका–विहार के लिए पर्यटकों के विशेष आकर्षण का केन्द्र है। शरद–ऋतु में इस झील में रंगों का एक अद्भुत दृश्य बनता है। झील के चारों ओर किनारों के वृक्ष पीले रंग से पुत–से जाते हैं। पहाडियाँ भूरा आभरण धारण कर लेती हैं। नीले पानी में जब भूरी पीली परछाइयाँ धुलती दिखाई देती हैं तो मानसबल की छटा देखते ही बनती है।

जम्मू–कश्मीर के लद्दाख क्षेत्र में भी कई बड़ी–बड़ी झीलें हैं। इनमें पंगोंग–छो,

छोमो–रि,, छोकर, ययि–छो, अमतीला–छो प्रमुख हैं। इनमें अधिकतर झीलें नमकीन पानी वाली हैं। 'पंगोंग–छो' झील इतनी विशाल है कि यह एक छोटे समुद्र का आभास देती है। खारे पानी की यह झील चंगथंग के मैदानी क्षेत्र में है। झील के किनारों पर ज़ेबरा तथा हिरण जैसे वन्य–प्राणियों के झुण्ड घास चरते नज़र आते हैं। चारों ओर फैली हरीतिमा और झील का निर्मल जल अलौकिक दृश्य उपस्थित करता है। झील के तल पर खनिजों का अक्षय भंडार है जिन्हें सदियों से पहाड़ों से पिघल कर बह आती बर्फीली नदियां संचित करती रही हैं। पंगोंग की ही तरह छोमोरि और ययि–छो नामक झीलों के तल पर भी खनिजों के विशाल संचय मौजूद हैं। ययि–छो तथा 'अमतीला छो' लद्दाख में ताज़ा पानी की बड़ी सुन्दर झीलें हैं। इनका प्राकृतिक सौंदर्य लद्दाख जाने वाले देशी–विदेशी सैलानियों के लिए स्मरणीय होता है।

जम्मू–कश्मीर राज्य का जम्मू क्षेत्र मुख्यतः पहाड़ी है। इसलिए यहाँ की सभी झीले पहाड़ी झीलों के वर्ग में रखी जा सकती हैं। ये हैं ' मानसर, सुरूईंसर, सनासर, कैलाश आदि।

मानसर झील जम्मू शहर से लगभग पैंसठ किलोमीटर दूर है। कहा जाता है कि इस झील की सृष्टि जगतपिता ब्रह्मा ने अपने मन की इच्छा शक्ति से की थी, इसलिए इस झील का नाम 'मनसर' या 'मानसर' पड़ा। महाभारत की एक कथा के अनुसार अर्जुन ने शेषनाग का पीछा करते हुए एक तीर मारा था। तीर धरती में गढ़ गया और पानी फूट निकला। यहीं मानसर झील बन गई। एक और कथा के अनुसार जब बभ्रुवाहन से युद्ध करते हुए अर्जुन घायल हो गए तो बभ्रुवाहन की माता अलोपी ने बेटे को बताया कि अर्जुन उसके पिता हैं। इस पर बभ्रुवाहन दुखी हो गए उन्होंने धरती में एक तीर मारा। यह तीर किसी अन्य स्थान पर जा निकला। दोनों स्थानों पर पानी फूट निकला और सुंदर झीलें बन गईं, जो कालांतर में मानसर और सुरूईंसर के नाम से प्रसिद्ध हुईं।

मानसर की प्राकृतिक छटा देखते ही बनती है। इसमें एक ओर कमल के फूलों की पाँतें खिली हैं। तो दूसरी ओर कछुओं तथा मछलियों के समूह निर्भय तैरते रहते हैं। झील की परिक्रमा में उमापति महादेव, भगवान नरसिंह तथा दुर्गामाता के प्राचीन मंदिर हैं। कुछ लोग मानसर के किनारे बच्चों का मुंडन–'संस्कार करना शुभ मानते हैं। झील के किनारे एक और अभयारण्य का निर्माण किया गया है जिसमें हिरण, नीलगाय, मोर आदि स्वच्छंद विचरते हैं। जम्मू से सुकराला माता के पैदल यात्री यहीं से होकर जाया करते थे।

मानसर से लगभग बारह किलोमीटर की दूरी पर एक और सुंदर झील सुरूईंसर है। इसके किनारे प्राचीन स्थानीय राजाओं के महलों के खंडहर विद्यमान हैं जो इस क्षेत्र के राजनीतिक महत्त्व की ओर संकेत करते हैं।

जम्मू से लगभग एक सौ तीस किलोमीटर दूर 'सनासर' की झील है, जिसका रास्ता पतनीटॉप से हाकर जाता है। चारों ओर से घिरे हरे–घने वनों के बीच यह झील कभी पारदर्शी मोती की तरह झिलमिलाती थी। यहाँ का पर्यावरण हर प्रकार से प्रदूषण–मुक्त है तथा वातावरण शांत एवं सौम्य है।

जम्मू की एक और प्रसिद्ध पहाड़ी झील 'कैलाश' है। यह भद्रवाह क्षेत्र में समुद्रतल से लगभग साढ़े चार हज़ार मीटर की ऊँचाई पर है। यहाँ वर्ष–भर बर्फ जीम रहती है। श्रावण–भाद्रपद में भद्रवाह से भगवान शंकर की पवित्र छड़ी की यात्रा कैलाश झील तक जाती है। यह कैलाश–यात्रा के नाम से जानी जाती है। सारांश यह है कि जम्मू–कश्मीर की झीलों का धार्मिक तथा ऐतिहासिक महत्त्व है। यह झीलें जीवनामृत जल का अक्षय स्रोत हैं और जलवायु को संतुलित करते वातावरण रमणीय बनाती हैं। इसी कारण ये झीलें विश्वभर में पर्यटन का मुख्य आकर्षण हैं।

प्रश्न–अभ्यास

बोध और सराहना

1. कश्मीर घाटी के संबंध में भूगोल–शास्त्रियों का क्या मत है ?
2. कश्मीर घाटी के संबंध में पौराणिक कथा क्या है ?
3. कश्मीर घाटी की मुख्य झीलों के नाम लिखिए।
4. 'डल झील' के विषय में पाँच वाक्य लिखिए।
5. 'डल झील' में स्थित दो द्वीपों के नाम लिखिए।
6. लद्दाख क्षेत्र की किन्हीं चार झीलों के नाम लिखिए।
7. मानसर झील से संबंधित कोई एक पौराणिक कथा लिखिए।
8. मानसर की प्राकृतिक छआ का पाँच वाक्यों में वर्णन कीजिए।
9. 'अभयारण्य' के विषय में आप क्या जानते हैं ?

भाषा–अध्ययन

1. हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले संस्कृत के शब्दों को तत्सम शब्द कहते हैं। जैसे :– क्षेत्र, पत्र आदि।

हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले संस्कृत के बदले हुए रूप को तद्भव कहते हैं। जैसे :– खेत, दूध आदि।

हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले बोलचाल के शब्दों को देशज कहते हैं जैसे : लुटिया, खटोला आदि।

हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले विदेशी–भाषाओं के शब्दों को विदेशी कहते हैं जैसे : चाकू, कानून, स्टेशन आदि।

निम्नलिखित शब्दों में तत्सम तथा तद्भव शब्दों को चुनकर लिखिए :

झील, प्रस्फुटित, सोता, भूचाल, ऋषि, पहाड़, स्थित, आजीविका, हाऊसबोट, मोटर, कृत्रिम, प्रकृति, ग्लेशियर, पर्यटक, दृश्य, आभरण, किनारा, भंडार, सैलानी, खेत, सृष्टि, परिक्रमा, अभयारण्य, सौम्य, अक्षय।

योग्यता विस्तार

प्रसिद्ध झीलों के चित्र एकत्रित करके उनके विषय में चार–चार वाक्य लिखिए।

दाता रणपत

रमेश – सर यह चित्र किसका है ?

अध्यापक – तुझे नहीं पता! यह तो रणपत का चित्र है। कहाँ से लिया है तूने ?

रमेश – मेरे चचेरे भाई के पास था, उसने मुझे दिया। कह रहा था हम इन्हें दाता कहते हैं।

अध्यापक – (सभी विद्यार्थीयों को) हाँ! बच्चो आपको नहीं पता ये बहुत ही न्यायकारी तथा दानी व्यक्ति थे। इसलिये सभी इन्हें दाता रणपत कहते हैं।

सूर्यकान्त – सर! हमें इनके विषय में सारी बात सुनाओ – कहाँ रहते थे ? इनके घर कौन–कौन था ?

अध्यापक – तो ठीक है सुनो।

विद्यार्थी – जी सर।

अध्यापक – जम्मू से लगभग बीस किलोमीटर की दूरी पर बीरपुर नाम का गांव है, दाता रणपत का जन्म वहाँ हुआ था। रणपत के पिता का नाम लद्दा था तथा माता का नाम आलया। रणपत का स्वभाव अत्यन्त ही नेक तथा शान्तिप्रिय था। कहीं कोई भी लड़ाई–झगड़ा होता तो सभी लोग उन्हें समझौता करवाने के लिये बुलाते थे।

संदीप – सर आपने पहले ही कहा था कि वे बहुत ही न्यायकारी थे, इसी लिये लोग उन्हें लड़ाई –झगड़े का निपटारा करने के लिये बुलाते होंगे, नहीं तो पक्षपात करने वालों को भला कौन बुलाता है।

अध्यापक – बच्चो, बहुत समझदार हो आपने बिल्कुल ठीक समझा है।

प्रतिभा – उनका विवाह हुआ था ?

अध्यापक – हाँ। उनका विवाह छोटी आयु में ही हो गया था उनकी पत्नी का नाम शुक्रा था। वह भी बहुत ही नेक स्वभाव की स्त्री थी। हर संकट की घड़ी में उसने रणपत का साथ दिया।

मोनिका – सर! मेरे बाबा जी सुनाते हैं कि इन्हें किसी दुष्ट जागीरदार ने धोखे से मरवा दिया था ?

अध्यापक – हाँ। बात बिल्कुल ठीक है पर इसके पीछे भी एक कहानी है।

विद्‌यार्थी – सर! हमें सारी बात सुनाओ कि ऐसा क्यों हुआ था ?

अध्यापक – उस समय डुग्गर प्रदेश का यह क्षेत्र छोटी–छोटी जागीरों में बंटा हुआ था। तथा बीरपुर का जागीरदार बांगी चाड़क था। वह बहुत ही दुष्ट, कपटी तथा दूसरों के अधिकार हथियाने वाला था। उसने छल–कपट के द्वारा अपने शरीक भाइयों की जमीन हथियाई हुई थी। बांगी के शरीक–भाइयों के घर अत्यंत गरीबी थी। दूसरी ओर दाता रणपत बीरपुर के सरपंच थे बांगी के शरीक–भाइयों ने उनसे प्रार्थना की कि वे उनके झगड़े का निपटारा कराएं।

प्रभात – सर! दाता रणपत जी मान गए?

अध्यापक – वे इस अन्याय को सहन नहीं कर सके इसलिये मान गए। परन्तु ....

सुषेण – सर! परन्तु क्या ? किसी ने रोक दिया ?

अध्यापक – क्योकि बांगी बहुत ही घमंडी, दुष्ट तथा कपटी था वह अपनी जीत की खातिर कुछ भी कर सकता था, इसलिये माता आलमा ने समझाया कि तूं बांगी के इस झगड़े में मत फंस। परन्तु रणपत नहीं माना। उसे अपने न्याय पर तथा अपने लोगों पर पूर्ण विश्वास था। फिर बड़ी ब्राह्मणा के स्थान पर बांगी तथा उसके शरीक परिवार एकत्रित हुए तथा सभी ने शपथ ली कि दाता रणपत जो भी निर्णय करेंगे सभी को मंजूर होगा।

अनामिका – सर! बांगी ने भी शपथ ली ?

अध्यापक – दरअसल बांगी को अपनी जागीरदारी तथा ताकत का घमंड था। उसने सोचा कि रणपत जो भी फेसला करेगा मेरे ही पक्ष में करेगा।

विध्यार्थी – सर! फिर क्या हुआ ?

अध्यापक – तदुपरान्त पंचायत लगी तथा दाता रणपत ने सभी बात ध्यान से सुनी और फिर अपना निर्णय सुनाया। निर्णय सुन कर सब लोग अत्यंत प्रसन्न हुए सिर्फ बांगी इस निर्णय पर दुखी था क्योंकि निर्णय बांगी के पक्ष में नहीं था, वह तो शरीक–भाइयों के पक्ष में था। इसलिये बांगी ने मन ही मन रणपत को मरवाने का निश्चय कर लिया।

रमेश – सर! बांगी ने किससे मरवाया?

अध्यापाक – बांगी ने रणपत की हत्या के लिये बहुत से लोागें को लालच दिया परन्तु कोई न माना। जहाँ तक कि हेड़ी नाम का एक बहुत ही बदनाम जाट था, उसने भी इन्कान कर दिया। परन्तु बांगी भी कम चालाक नहीं था। उसे कहीं से पता चला कि रणपत के मसेरे भाई रणपत से द्वेष रखते हैं तथा उससे उनकी शत्रुता है, बस फिर क्या था? उसने उनको बुलाया तथा उन्हें भड़का कर रणपत की हत्या के लिये तैयार किया। उन्होंने भी रणपत को किसी षड़यन्त्र में उलझा कर धोखे से मरवा दिया।

मोनिका – सर! मेरे बाबा जी कहते हैं कि बांगी को इस हत्या का भयंकर परिणाम भुक्तना पड़ा। उसे कोढ़ की बीमारी हो गई। शरीर के सभी अंग गल गए। जहाँ तक कि उसके घर के लोग भी उसे छोड़ गए।

अध्यापक – बच्चो! सत्य एवम् न्याय कभी भी निष्फल नहीं जाते । सत्य एवम् न्याय की खातिर दाता रणपत के बलिदान को आज भी लोग स्मरण करते हैं। वे हमारे अमर लोकनायक हैं।

रमेश – हाँ सर! बीरपुर के स्थान पर उनकी समाधि भी बनी हुई है। लोग वहाँ जाकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते तथा उनका स्मरण करते हैं।

विद्यार्थी – सर! आपने वास्तव में बहुत ही न्यायकारी, सच्चे तथा आदर्श महापुरूष के बलिदान की गाथा सुनाई है। हमें इससे पहले यह सब पता नहीं था।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिये :–

(क) रमेश के हाथ में किसका चित्र था ?

(ख) दाता रणपत किस प्रकार के व्यक्ति थे ?

(ग) दाता रणपत को लोग क्यों चाहते थे ?

(घ) बांगी चाड़क ने रणपत को क्यों मरवाया ?

(ङ) माता आलमा के समझाने के बाबजूद भी दाता रणपत झगढ़ा निपटाने से पीछे क्यों नहीं हुआ ?

2. रिक्त स्थान भरिये :–

(क) सर यह चित्र ....है।

(ख) ये बहुत ही न्यायकारी तथा .... व्यक्ति थे।

(ग) उनका विवाह छोटी .... मे ही हो गया था।

(घ) बीरपुर का जागीरदार .... था।

(ङ) उसने .... द्वारा अपने शरीक भाइयों की जमीन हथियाई हुई थी।

(उ) दाता रणपत के चरित्र पर पाँच वाक्य लिखे :–

....

....

....

....

....

3. निम्नलिखित शब्दों के वाक्य बनाइये :–

दाता रणपत ....

बीरपुर ....

निपटारा ....

लड़ाई–झगड़ा ....

न्यायकारी ....

दोहा एकादश

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदैं साँच है, ताके हिरदै आप।।

बोली एक अमोल है, जो कोई बोले जानि।
हिये तराजू तौलि के, तब मुख बाहर आनि।।

अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।।

काल्ह करै सो आज कर, आज करै सो अब्ब।
पल में परलै होयगी, बहुरि करैगो कब्ब।।

साँईं इतना दीजिए, जामें कुटुम समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय।।

निन्दक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी, साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय।।

दोस पराये देखि करि, चला हसंत–हसंत।
अपने याद न आवई, जिनका आदि न अंत।।

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।

माला फेरत जुग गया, फिरा न मन का फेर।
क्र का मनका डारि दे, मन का मनका फेर।।

सोना, सज्जन, साधुजन, टूटि जुरै सौ बार।
दुर्जन, कुंभ–कुम्हार के, एके धका दरार।

तिनका कबहूँ न निन्दिए, जो पायन तर होय।
कबहूँ उड़ि आँखिन परे, पीर घनेरी होय।।

– कबीरदास

प्रश्न–अभ्यास

बोध और सराहना

1. कबीर ने किसके हृदय में भगवान् को स्थित माना है ?
   (क) जो पाप नहीं करता।
   (ख) जो बहुत कम झूठ बोलता है।
   (ग) जो तप करता है।
   (घ) जिसके हृदय में सचाई है।

2. कवि ने अत्यधिक बोलना और अत्यधिक चुप रहना दोनों को ही त्याज्य क्यों बताया है ?

3. निम्नांकित कथनों के लिए लेखक ने क्या तर्क दिए हैं ?
   (क) हे ईश्वर! मुझे इतनी ही संपत्ति दीजिए ....।
   (ख) अपने निन्दक को अपने समीप ही बनाए रखिए, क्योंकि ....।
   (ग) साधु की जाति न पूछकर ....।
   (घ) माला के मनके को फिराना छोड़कर ....।

4. सोना, सज्जन, साधुजन, टूटि जुरै सौ बार।
   दुर्जन,कुंभ–कुम्हार के,एके धका दरार।।
   उपर्युक्त दोहे में सज्जन को सोना और दुर्जन को कुम्हार का घड़ा क्यों कहा गया है ?

5. 'तिनका कबहूँ न निन्दिए' दोहे में किस बात की ओर संकेत किया गया है?

6. निम्नलिखित से संबंधित दोहों का चयर करें :–
   (क) आज का काम कल पर नहीं छोड़ना चाहिए।
   (ख) कोई बात सोच–समझकर बोलनी चाहिए।
   (ग) दूसरों के दोष देखने के बजाय अपना दोष देखना हितकर है।
   (घ) दीन–हीन और निर्धन को अधिक दबाना नहीं चाहिए, क्योंकि किसी दिन उसमें प्रतिहिंसा जाग सकती है और वह आपके लिए सिरदर्द बन सकता है।

योग्यता–विस्तार

1. मीठी वाणी के महत्त्व पर कबीर, तुलसी और रहीम के दो–दो दोहों का संग्रह करें।
2. कबीर के ऐसे पाँच दोहों का संग्रह करें, जिनमें भक्ति के बाह्य आडंबरों का विरोध किया गया हो। इन दोहों को कंठस्थ करके कक्षा में सुनाएँ।

लद्दाख का विवाह–उत्सव

लद्दाख जम्मू–कश्मीर प्रदेश का एक पर्वतीय क्षेत्र है। इस क्षेत्र का अधिकांश मैदानी भाग रेतीला है। हरियाली बहुत कम नज़र आती है। जलवायु शुष्क और ठंड़ा है। इस कारण यहाँ के लोगों का जीवन कठिन तथा संघर्षपूर्ण है। परन्तु उनके चेहरों पर मानसिक तनाव नहीं दीखता और वे सदा सदाबहार तथा हँसमुख दिखाई देते हैं। लोगों की यह प्रवृत्ति उनके उत्सवों में स्पष्ट झलकती है – विशेषकर विवाह–उत्सव में।

लद्दाख में विवाह की प्रथा कुछ अलग तरह की है। लड़की अथवा लड़के की सगाई उनके मामा के हाथों होना आवश्यक माना जाता है। इसमें माता–पिता की भूमिका कम रहती है। मामा के द्वारा सगाई तय होने के बाद ही लड़की तथा लड़के के माता–पिता की सहमति ली जाती है। लड़के वाले कन्या का हाथ माँगने जाते हैं और सगाई की रस्म वहीं पूरी की जाती है। सगाई के पश्चात् गाँव वालों को वर–पक्ष की ओर से निमंत्रण देकर सूचित किया जाता है कि अमुक मास की अमुक तिथि को हमारे पुत्र का विवाह अमुक कन्या के साथ होना निश्चित हुआ है। इसी निमंत्रण में बारात में सम्मिलित होने वाले लोगों के नाम मनोनीत किए जाते हैं। मनोनीत किए गए व्यक्ति बारात में शामिल होने से इनकार नहीं कर सकते। बारातियों को 'न्याओपा' कहते हैं।

प्रथा है कि जब बारात वधू के द्वार पर पहुँचती है तो उसका स्वागत वधू–पक्ष की ओर से एक प्रकार की गीत–प्रश्नावली से होता है। वधू–पक्ष वाले विवाह के उत्सव तथा रीत–रस्म के बारे में प्रश्नात्मक गीत गाकर सुनाते हैं। इसका उत्तर वर–पक्ष की ओर से गीतों में ही दिया जाता है। ऐसे सैकड़ों लोक–गीत लद्दाख

में लोगों को सदा स्मरण होते हैं। इसलिए यह गीत प्रतियोगिता सुनने–देखने वाले तमाम लोग बहुत हर्ष का अनुभव करते हैं। प्रश्नोत्तर वाले गीत का एक अंश इस प्रकार है :–

प्रश्न : पुरुष को किससे सावधान रहना चाहिए तथा किसके प्रति सतर्क रहना चाहिए?

उत्तर : पुरुष को अपने शत्रु से सावधान रहना चाहिए। शत्रु पर विश्वास करने से हानि उठानी पड़ सकती है। अपने सगे संबंधियों के साथ प्रेम का व्यवहार करना चाहिए। उनको उचित आदर देने के प्रति सदा सतर्क रहना चाहिए।

प्रश्न : नारी में क्या गुण होने चाहिए ?

उत्तर : नारी को दूर से आए अतिथियों के सत्कार का विशेष ध्यान रखना चाहिए। अपने पति के साथ सदा हँसकर पेश आना चाहिए। पड़ोसियों के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए। प्रथा के अनुसार इस गीत–प्रतियोगिता में वर–पक्ष के विजयी होने पर ही 'न्याओपा' वधू के घर में प्रवेश कर सकते हैं और फिर विवाह का संस्कार आरम्भ होता है। यह सब दृष्टि में रखकर वर–पक्ष वाले सुयोग्य गीतकारों और गायकों को ही 'न्याओपा' मनोनीत दकरते हैं। उनमें से एक को मुख्य 'न्याओपा' निश्चित किया जाता है जो गीत–प्रश्नों का सीधा और शीघ्र उत्तर दे सके।

लद्दाखी विवाह की विशेषता यह है कि बारात के साथ दूल्हा नहीं जाता। बाराती (न्याओपा) सुन्दर, सुसज्जित रस्मी वेष–भूषा पहन कर जाते हैं और बहू को अपने साथ घर ले आते हैं। फिर घर में विधिवत दूल्हा–दूल्हन का विवाह–संस्कार संपन्न होता है। इस अवसर पर दूसरे पक्ष की ओर से केवल वधू की एक–दो सहेलियाँ ही उपस्थित रह कर उत्सव में शामिल होती है। जिस प्रकार वधू के घर में साधारण भोज दिया जाता है उसी प्रकार वर–पक्ष के घर में भी साधारण भोजन से ही सबका सत्कार किया जाता है। भोजन में छंग (स्थानीय पेय) का बड़ा महत्तव माना

जाता है। इसके अतिरिक्त सत्तू, चावल, रोटी तथा एक–दो सब्ज़ियाँ बनती हैं परन्तु केवल भोजन खिलाकर समारोह पूरा नहीं होता। वधू तथा वर दोनों के घरों में सब आमंत्रित लोग तथा गाँव के अन्य जन सामूहिक लोक–नृत्यों में भाग लेते हैं। नया दूल्हा तथा नवेली दुल्हन दोनों को इस नृत्य–गान में भाग लेना होता है। इससे विवाह की पारिवारिक रस्म एक सामाजिक उत्सव में बदल जाती है। विवाह के धार्मिक अनुष्ठान लामा (बौद्ध धर्मगुरु) कराते हैं। बारात के आने पर वधू के द्वार पर पूजा होती है और मंत्रों द्वारा यात्रियों के साथ आए किसी आशंकित अनिष्ट ग्रह का निवाराण किया जाता है। वधू की माँ 'करछोल' (छंग भरा एक प्रकार का लोटा) लेकर बारातियों का स्वागत करती है। 'करछोल' के मुहाने पर माखन के टुकड़े लगे रहते हैं। वधू की माँ बारातियों को प्यालों में छंग बाँटकर देती है और उनके माथों पर माखन के टीके लगा देती है। इसी प्रकार बारात के घर लौट आने पर वर की माँ दुल्हन तथा अन्य लोगों का स्वागत छंग तथा माखन से करती है। इसके बाद लामा अग्निकुंड के सामने दूल्हा–दुल्हन को बिठाकर पोथियों से मंत्र पढ़ते हैं और विवाह का संस्कार पूरा करते हैं।

सारांश यह कि लद्दाख का विवाह उत्सव हर दृष्टि से जीवंत तथा रंग–बिरंगा होता है। उत्सव के पहले दिन से अंत तक कई ऐसी रीत–रस्में मनाई जाती हैं जो शेष भारत की प्रथाओं से सर्वथा भिन्न हैं। ये एकदम नवीन और अपूर्व लगती हैं। छोटे–से–छोटे संस्कार और बड़े–से–बड़े कार्यक्रम के साथ इतने लोकगीत तथा लोक–नाच जुड़े हुए हैं। कि इनकी गिनती असंभव हैं। भौगोलिक दूरी और दुर्गम रास्तों के बावजूद लद्दाखवाली अपनी संस्कृति और देश की संस्कृति को और भी समृद्ध कर रहे हैं।

– 'विभागीय'

प्रश्न–अभ्यास

बोध–विचार

1. लद्दाख के विवाह में मामा की भूमिका लिखिए।
2. बारातियों को लदाखी भाषा में किस नाम से पुकारा जाता है ?
3. बारातियों का अध्यक्ष किन गुणों के आधार पर मनोनीत किया जाता है ?
4. लद्दाखी विवाह में गीत–प्रश्नावली का क्या महत्त्व है ?
5. वधू के घर–द्वार पर गीत–प्रश्नावली का मुख्य उद्देश्य क्या है ?
6. लद्दाखी विवाह की विशिष्टता क्या है ?

भाषा–अध्ययन

(क) पाठ में प्रयुक्त हुए निम्न शब्दों व पदबंधों से मिलते हुए अर्थ वाले हिंदी शब्द व पदपंध लिखिए :

नज़र आना, सदाबहार, तनाव, तय होना, रस्म पूरी करना, इनकार करना, तमाम, पेश आना, रस्मी वेष–भूषा, एकदम, बावजूद।

(ख) निम्न पारिभाषिक शब्दों के अर्थ स्पष्ट कीजिए :–

न्याओपा, गीत–प्रश्नावली, छंग, लामा।

(ग) 'माता–पिता' एक सामासिक शब्द है जिसका अर्थ है माता और पिता। इस प्रकार के शब्दों को द्वंद्व समास कहते हैं। द्वद्व समास के कोई पाँच सामासिक शब्द लिखिए।

योग्यता विस्तार :

अपने प्रदेश के विवाह–उत्सव के विषय में पाँच पंक्तियाँ लिखें ।

पुंछ और राजौरी के प्रसिद्ध तीर्थस्थान

पुंछ और राजौरी जम्मू के दो ज़िले हैं। इन दोनों ज़िलों में अनेक तीर्थस्थल हैं, जिनमें नंगाली साहिब, बुड्ढा अमरनाथ, शाहदरा शरीफ, ज़ियारत पीर छोटे–शाह, रामकुंड मंदिर, मंदिर बनखंडी महादेव आदि उल्लेखनीय हैं।

पुंछ जम्मू से 245 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह सीमावर्ती क्षेत्र प्राकृतिक सौंदर्य के लिए आकर्षण का केन्द्र है। इसे छोटा–कश्मीर भी कहते हैं। विभिन्न धर्मों और सम्प्रदायों के लोग यहाँ एक साथ मिलकर रहते हैं। पुंछ नगर में अत्याधिक मंदिर, गुरुद्वारे, मस्जिदें आदि होने के कारण इसे देवभूमि कह सकते हैं। यहाँ के ऊँचे पर्वतीय शिखर, घने वन, निर्मल जल के स्त्रोत, कल–कल करती नदियाँ और चौड़े मैदान मन को मोह लेते हैं।

पुंछ में देवी–देवताओं और पीरों–संतों के स्थल कहीं तो गुफाओं में हैं, तो कहीं पर्वत शिखरों पर। भिन्न–भिन्न संप्रदायों के लोग इन तीर्थ सिलों में श्रद्धापूर्वक जाते हैं।

पुंछ नगर से पाँच किलोमीटर की दूरी पर गुरुद्वारा नंगाली–साहिब स्थित है। यह संतपुरा नंगाली साहिब के नाम से भी जाना जाता है। इस गुरुद्वारे की सथापना लगभग दो सौ वर्ष हुए संत भाई मेला सिंह जी ने की थी। वे बड़े दार्शनिक और परोपकारी संत थे। वे संतभाई रोचा सिंह जी के शिष्य थे जिनको दसवें गुरु गोविन्द सिंह जी ने सिक्ख–पंथ का प्रचार करने के लिए पुंछ और कश्मीर भेजा था। जब गुरुद्वारे का निर्माण हुआ तो वहां जंगल ही जंगल थे। यह भव्य गुरुद्वारा द्रंगुली नाले के तट पर स्थित है।

संत भाई मेला सिंह जी स्वयं एक गुफा में रहते थे। यह गुफा आज भी सुरक्षित

है। संतभाई मेला सिंह जी का आरंभ किया हुआ 'गुरु का लंगर' आज भी निरंतर चल रहा है।

गुरुद्वारा नंगाली साहिब मुख्यतः तीन भागों में फेला हुआ है। इसके एक भाग में संतों–महंतों की देहरियाँ बनी हुई हैं। लंगर के एक ओर 'मोदीखाना' है, जो गुरुद्वारे का भंडारघर है। भंडार का लेखा–जोखा रखने वाले को मोदी कहा जाता है। गुरुद्वारे के तीसरे भागे में एक दीवानघर और कुछ कमरे बने हुए हैं। दीवानघर में श्री गुरुग्रंथ साहिब जी का पाठ तथा शब्द–कीर्तन होता है।

गुरुद्वारा नंगाली साहिब का बड़ा ऐतिहासिक तथा धार्मिक महत्त्व है। सन् 1828 में जम्मू के महाराजा गुलाब सिंह जी यहाँ पधारे और श्रद्धावश उन्होंने पुंछ के पाँच तथा कश्मीर के तीन गाँव इस गुरुद्वारे के नाम लिख दिए।

वैशाखी के मेले पर यहाँ खूब चहल–पहल होती है। दूर–दूर से हर धर्म और सम्प्रदाय के लोग यहाँ आते हैं और श्रद्धा–सुमन भेंट करते हैं। यहाँ पर यात्रियों के रहन–सहन तथा लंगर का सुप्रबन्ध है।

पुंछ से ही लगभग बाईस किलोमीटर की दूरी पर बुड्ढा अमरनाथ जी का देवस्थल मंडी (राजपुरा) की रमणीय घाटी में स्थित है। यह स्थल एक ऊँची पहाड़ी के आँचल में है। इस देवस्थल के पास लोरन नाला बहता है, जिसका कल–कल बहता स्वच्छ पानी पूरी घाटी के शांत वातावरण को गुंजा देता है। चारों और घने जंगल हैं। शीतकाल में यह घाटी बर्फ की चादर से ढक जाती है जिससे पूरा दृश्य और भी मनमोहक हो उठता है।

बुड्ढा अमरनाथ जी का मंदिर एक सुंदर चकमक शिला से बना हुआ है। इसके भीतर उसी शिला का एक खंड भगवान शंकर के रूप में पूजा जाता है। मंदिर में शिव पार्वती और गणेश जी की मूर्तियाँ भी स्थापित की गई हैं। शिव जी पर चढ़ाया जाने वाला जल प्रणाली से बहकर मंदिर में ही कहीं समा जाता है।

बुड्ढा अमरनाथ जी से एक रोचक पौराणिक कथा जुड़ी हुई है। कहते हैं कि एक बार पुंछ की महारानी चंद्रिका, बुढ़ापे के कारण कश्मीर घाटी में स्थित स्वामी अमरनाथ जी की यात्रा पर नहीं जा सकती क्योंकि इसका रास्ता अति दुर्गम है। वे बहुत दुखी हुई। उन्होंने भगवान् शंकर की तपस्या की, जिस पर भगवान ने उन्हें स्वप्न में कहा कि मैं आपको लोरन नाले के किनारे दर्शन दूँगा। आखिर श्रावण–पूर्णिमा के दिन शंकर प्रकट हुए। बूढ़ी महारानी को भगवान् शंकर वृद्ध रूप में दिखाई दिए। तब से यह तीर्थस्थल बुड्ढा अमरनाथ कहा जाने लगा।

बुड्ढा अमरनाथ में श्रावण–पूर्णिमा को एक बड़ा मेला लगता है जिसमें न केवल पुंछ से बल्कि देश के कोने–कोने से हज़ारों श्रद्धालु जन सम्मिलित होते हैं। दशनामी अखाड़ा से बुड्ढा अमरनाथ जी की पवित्र छड़ी की शोभा–यात्रा निकलती है। इस शोभा–यात्रा में अखाड़ें के स्वामी जी महाराज एक सुसज्जित पालकी में विराजमान होते हैं। साधु–संतों की मंडिलयाँ झंडे फहराती हुई तथा तुरही बजाती हुई साथ–साथ चलती हैं। श्रद्धालु जगह–जगह पवित्र छड़ी तथा शोभायात्रा में सम्मिलित स्वामी जी महाराज का स्वागत करते हैं। यात्रियों तथा श्रद्धालुओं की भीड़ जुटती है। इस प्रकार बुड्ढा अमरनाथ के मेले में एकता, भाईचारे तथा रंगबिरंगी भारतीय संस्कृति की एक सुन्द झलक मिलती है।

बुड्ढा अमरनाथ में यात्रियों के रहने के लिए एक सुन्दर भवन का निर्माण हुआ है तथा भोजन आदि और चिकित्सा का भी सुन्दर प्रबंध है। कश्मीर घाटी में स्थित अमरनाथ की यात्रा से पूर्व बुड्ढा अमरनाथ की यात्रा अनिवार्य मानी जाती है।

ज़िला पुंछ के पास ही ज़िला राजौरी है। राजौरी नगर से लगभग पैंतीस किलोमीटर की दूरी पर 'शाहदरा शरीफ' नामक एक प्रसिद्ध 'जियारत' है। 'शाहदरा शरीफ' में महान् सूफी पीर 'गुलाम शाह' का मकबरा है। गुलाम शाह साहिब का जन्म रावलपिंडी के एक गाँव के एक सैय्यद परिवार में हुआ था। किशोरावस्था में ही वे घर

त्याग कर ईश्वर की खोज में निकल पड़े थे। घूमते–घूमते पुंछ आए। जीवन के अंतिम वर्ष उन्होंने 'शाहदरा शरीफ' में बिताए। यहाँ उन्होंने चालीस दिन इबादत की। इस इबादत को 'चिल्ला' कहते हैं। चिल्ला काट कर जब वे बाहर आए तो श्रद्धालुओं ने जगह साफ की तथा इस ज़ियारत का निर्माण करवाया। पीर साहिब का खड़ाऊँ, हथौड़ा आसन और कटोरा आज तक भी सुरक्षित हैं। भक्त इनके दर्शन करके स्वयं को धन्य मानते हैं। विभिन्न धर्मों के लोग साल भर यहाँ आकर मन्नतें मानते हैं। कहते हैं कि एक बार महाराजा गुलाब सिंह जी साधारण वेश में यहाँ आए। उन्होंने पीर साहिब की बड़ी सेवा की और उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया। राजा ने ज़ियारत के नाम बहुत सी ज़मीन लिख दी। वह सारी ज़मीन इस 'ज़ियारत' की सम्पत्ति है। 'जियारत' से होने वाली आय से कई संस्थाएँ चलती हैं तथा जनहित के कई कार्य किए जाते हैं।

'शाहदरा शरीफ' के आँगन में संतरे का एक पेड़ है जिस पर बारह महीने फल लगते हैं। विश्वास किया जाता है कि इस पेड़ के नीचे बैठे किसी भी व्यक्ति की संतान–कामना पूरी हो जाती है यदि कोई फल स्वयं ही उसके लिए आ गिरे।

इस ज़ियारत के प्रति लोगों की अत्यधिक आस्था है। यहाँ भक्त–जन श्रद्धा के सुमन तथा बहुमूल्य चढ़ावे चढ़ाते हैं। जम्मू के पुंछ और राजौरी ज़िलों के तीन प्रमुख तीर्थों के वर्णन से स्पष्ट होता है कि जम्मू प्रांत के लोगों के मन में सब धर्मों के प्रति समान श्रद्धा है।

– 'विभागीय'

प्रश्न—अभ्यास

बोध और विचार

1. जम्मू से पुंछ कितनी दूरी पर स्थित है ?
2. पुंछ के किन्हीं तीन देवस्थलों के नाम लिखें।
3. नंगाली—साहिब गुरुद्वारे की स्थापना किसने की थी ?
4. 'शाहदरा शरीफ' की ज़ियारत किसके नाम से प्रसिद्ध है ?
5. 'शाहदरा शरीफ' के बारे में पाँच वाक्य लिखें।
6. बुड्ढा अमरनाथ जाने वाली 'छड़ी—यात्रा' का वर्णन करें।
7. 'चिल्ला' से क्या तात्पर्य है ?
8. बुड्ढा अमरनाथ संबधित पौराणिक कथा लिखें।

भाषा—अध्ययन

1. नीचे दिए गए मूल शब्दों से तीन—तीन शब्द बनाएँ।

    शोभा, काल, स्वच्छ, धर्म, खंड।

    जैसे :— तप—तपस्या, आतप, तपस्वी।

2.'प्र' उपसर्ग से बने तीन शब्द बनाएँ।

3. नीचे दिए गए अनेक शब्दों के लिए एक—एक शब्द लिखें :

    1. चालीस दिन की इबादत।
    2. जिसकी संतान न हो।
    3. जो मन को मोह ले।
    4. जहाँ पहुँचना कठिन हो।

4. नीचे बायीं ओर कुछ विशेषण दिए गए हैं और दायीं ओर उनके विशेष्य। किंतु ये

दोनों आमने—सामने न होकर ऊपर—नीचे हैं। प्रत्येक विशेषण के साथ उपयुक्त विशेष्य रिक्त सीान पर लिखे :—

जैसे :—	प्राकृतिक	संत	सौंदर्य
	1. धार्मिक	क्षेत्र	....
	2. स्वच्छ	स्थल	....
	3. सीमावर्ती	जल	....
	4. घने	सौंदर्य	....
	5. दार्शनिक	वन	....

योग्यता विस्तार

अपने नगर (शहर) के किसी एक प्रसिद्ध देवस्थल पर जाकर वहाँ के इतिहास के बारे में जानकारी प्राप्त करें।

स्वामी अमरनाथ की यात्रा

कश्मीर प्राकृतिक सौंदर्य के अतिरिक्त अनेक तीर्थस्थलों के कारण विश्वभर में प्रसिद्ध है। इन स्थलों में स्वामी अमरनाथ जी का बड़ा महत्त्व है। कहते हैं कि भगवान शंकर ने कश्यप ऋषि की तपस्या से प्रसन्न होकर उन्हें प्रतीकस्वरूप दो छड़ियाँ प्रदान की थीं जिन्हें श्रावणपूर्णिमा के दिन अमरनाथ की गुफ़ा तक सामूहिक यात्रा के साथ पहुँचाने का आदेश दिया था। तब से कश्मीरवासियों के लिए छड़ी–यात्रा की परंपरा चल पड़ी जो अब एक महत्त्वपूर्ण धार्मिक रीति के रूप में प्रचलित है।

स्वामी अमरनाथ की पर्वतीय गुफ़ा दक्षिणपूर्व कश्मीर में स्थित है। यह गुफा समुद्रतल से लगभवग 4000 मीटी की ऊँचाई पर एक हिमाच्छादित घाटी में स्थित है। गुफ़ा लगभग 10 मीटर ऊँची और इतनी ही चौड़ी है। गुफ़ा के भीतर बर्फ़ का शिवलिंग बनता है जो चंद्रमा के घटने–बढ़ने के साथ घटता–बढ़ता है और पूर्णमासी के दिन पूरा आकार ग्रहण कर लेता है।

परंपरा के अनुसार स्वामी अमरनाथ जी की यात्रा श्रावण–शुक्ला–पंचमी को श्रीनगर के 'दशनामी अखाड़ा' से आरंभ होती है। अखाड़े के महंत यात्रा के सर्वे–सर्वी होते हैं और वे ही छड़ी–यात्रा की अगुआई करते हैं। छड़ी का यात्रा–मार्ग निश्चित है। इसमें कोई परिवर्तन नहीं किया जाता। दशनामी अखाड़ा से चलकर श्रीनगर के 'दुर्गानाग' मंदिर में छड़ी–यात्रा रुकती है। प्रथानुसार पूजा–पाठ होता है। थोड़ी देर रुकने के बाद यात्रा 'बीजबिहाड़ा' की ओर अग्रसर होती है। स्थानीय लोग जगह–जगह पवित्र छड़ी का स्वागत करते हैं। चढ़ावे चढ़ाते हैं और मन्नतें मानकर नैवेद्य प्राप्त करते हैं।

'बीजबिहाड़ा' यात्रा–मार्ग का एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव है। यहाँ के प्रसिद्ध विजेयेश्वर मंदिर के परिसर में यात्रियों का भव्य स्वागत होता है, पूजा–आराधना की जाती है और थोड़ी देर विश्राम करने के बाद यात्रा अनंतनाग की ओर प्रस्थान करती है।

'अनंतनाग' दक्षिण–कश्मीर का सबसे बड़ा कस्बा है। यहाँ 'नागबल' के तीर्थस्थल में पवित्र छड़ी एक दिन विश्राम करती है। एक बड़ा लंगर लगता है जहाँ साधुओं और अन्य यात्रियों के लिए भोजनादि का प्रबंध रहता हैं। 'नागबल' के सोते में पवित्र छड़ी जाती है। शाम को छड़ी यात्रा मटन(मार्तंड) की ओर चल पड़ती है।

मार्तंड–तीर्थ अनंतनाग से 8 किलोमीटर की दूरी पर है। यहाँ एक बड़ा जलाशय है जिसके केंद्र में भगवान शिव का एक छोटा–सा मंदिर है। जल में सैकड़ों हरी–नीली मछलियाँ एक किनारे से दूसरे किनारे तक निर्भय तैरती रहती हैं। लोग इन मछलियों को अन्नकण खिलाने में पुन्य–फल की प्राप्ति मानते हैं। इस तीर्थस्थान से प्रस्थान करने के बाद छड़ी–यात्रा 'ऐशमुकाम' पहुँचती है और मार्तंड–नहर के किनारे से लगी हुई सड़क से पहलगाम की ओर रवाना होती है। यहाँ से प्रकृति के सुहाने दृश्य देखने को मिलते हैं। लगभग 4 किलोमीटर तक यात्रा पहाड़ी के आँचल से गुज़रती है। बाईं ओर 'लिदर' नामक पहाड़ी–नाले का रूपहला पानी तेज़ गति से बहता है। सड़क के दाईं ओर हरे–हरे घने वन और हरी–भरी वादियों के बीच झरझराते हुए जलप्रपात देखकर यात्रियों का मन आनंदित हो जाता है। तब भट्टकूट गाँव के घने जंगलों से होते हुए यात्रा आगे बढ़ती है। यहाँ देवदार, चीड़ आदि के वृक्षों से सूर्य की किरणें छनकर आती हैं। इस मनोहर प्राकृतिक सुषमा को देखकर यात्री विशेष आनंद का अनुभव करते हैं। थोड़ी दूर चलकर 'गणेशबल' तीर्थ के दर्शन होते है। इस स्थान पर 'लिदर' नदी के बीच गणेश जी की सिंदूरपती बड़ी शिला–प्रतिमा है। यात्री किनारे से ही गणेश जी की पूजा–अर्चना करते हैं। गणेशबल

पहलगाम–घाटी का द्वार है। इससे आगे 'नूनवन' का विस्तृत हरा मैदान है। छड़ी–यात्रा का आधार–शिविर यहीं लगता है। यात्रियों का पंजीकरण भी इसी–स्थान पर किया जाता है। मैदान में चारों ओर तंबू गाड़े जाते हैं और यात्रा की तैयारियों को अंतिम रूप दिया जाता है अर्थात् यात्रियों के लिए घोड़ों, पालकियों आदि की व्यवस्था की जाती है। इस प्रकार यह यात्रा सैकड़ों लोगों की आजीविका का साधान बन जाती है। पवित्र–छड़ी पहलगाम के शिव मंदिर में ही रुकती है।

पहलगाम–घाटी में घरघराती लिदर (लंबोदरी) नदी बहती है जिसके किनारों पर, यात्रा के समय तंबुओं का एक नगर सा बस जाता है। अधिकांश यात्री सीधे पहलगाम पहुँचते हैं और यात्रा में सम्मिलित हो जाते हैं। पहलगाम के विश्वप्रसिद्ध स्वास्थ्यवर्धक स्थान पर यात्री तम्बुओं के अतिरिक्त निजी, सरकारी होटलों तथा अन्य विश्रामस्थलों में रहते हैं। दो दिन विश्राम करने के बाद श्रावण–शुक्ल–पक्ष की द्वादशी के दिन प्रभातवेला में यात्रा अगले पड़ाव 'चंदनवाड़ी' के लिए चल पड़ती है। यह स्थान चीड़ के वनों के लिए प्रसिद्ध है।

पहलगाम से 13 किलोमीटर दूर इस छोटी सी घाटी में शेषनाग झील से आने वाला एक पहाड़ी–नाला बहता है। नाले के ऊपर वर्षों से जमी हिमानी यात्रियों के लिए पुल का काम देती है। इसे देखने के लिए हमेशा पर्यटकों का ताँता बंधा रहता है।

चंदनवाड़ी से अगले पड़ाव 'शेषनाग' तक का रास्ता सर्पिल आकार का है। 'पिसू' नामक खड़ी पहाड़ी पर यह मार्ग बड़ा दुर्गम है और यात्रियों के सामने मानो एक चुनौती के रूप में खड़ा होता है। इस तीखी चढ़ाई पर साँस फूल जाती है और कई यात्रियों को ऑक्सीजन की आवश्यकता पड़ती है। इस पहाड़ी पर 'अशुद' नाम की एक जड़ी–बूटी उगती है जिसकी महक से किसी–किसी यात्री पर मूर्च्छा छा जाती है। चोटी पर पहुँचकर हरा–भरा समतल मैदान है जहाँ यात्री सुस्ताते हैं। चारों

ओर से आती झरनों और सोतों की कल–कल ध्वनि जैसे यात्रियों का स्वागत करती है। आगे का मार्ग पर्वत–शिखरों से होता हुआ अगले पड़ाव 'शेषनाग' की ओर जाता है। लगभग 3500 मीटर ऊँचाई पर स्थित शेषनाग नामक झील इस यात्रामार्ग का मुख्य आकर्षण है। शेषनाग के फणों की तरह उठी हुई चोटियों से घिरी होने के कारण यह झील 'शेषनाग' कहलाती है। इसका लावण्य देखते ही बनता है।

इस झील में स्नान करने का बड़ा महत्त्व माना जाता है। शेषनाग के एक ओर –वावजन' का पठार है। वावजन का शब्दार्थ है – वायु का दैत्य। इस पठान पर प्रायः तेज़ हवाएँ चलती हैं, इसीलिए इस स्थान का नाम 'वावजन' है। राज को यात्री यहीं विश्राम करते हैं और अगले दिन नई स्फूर्ति और उत्साह के साथ 'महागुनस' की ओर चल पड़ते हैं। 'महागुनस' नामक पहाड़ी का शिखर इस यात्रा–मार्ग का सबसे ऊँचा स्थल है और यात्रियों के धैर्य की परीक्षा लेता है। यह स्थान समुद्रतल से लगभग 4500 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। शिखर के उस पार लगभग 3 किलोमीटर की ढलान है, जो पंचतरणी–घाटी में समाप्त हो जाती है।

'पंचतरणी' एक विशाल समतल मैदान है जहाँ पाँच नदियाँ बहती हैं। इसीलिए इस स्थान का नाम 'पंचतरणी' रखा गया है। एक पौराणिक कथा के अनुसार इन पाँच नदियों का संबंध भगवान शंकर की पाँच अलकों में बहने वाली गंगा की धाराओं से है। ये धाराएँ भगवान शंकर की जटाओं से उस समय बह निकलीं थीं जब उन्होंने आकाश से उतरी गंगा को अपनी जटाओं में धारण किया था। यात्री इन पाँचों नदियों में स्नान करते हैं और रातभर विश्राम करने के बाद पूर्णमासी के दिन अंतिम पड़ाव की ओर चल पड़ते हैं।

'पंचतरणी' से आगे एक संकरी पगडंडी से जाना पड़ता है जिसे 'संतसिंह की चढ़ाई' कहते हैं। पहाड़ी के दूसरी ओर छड़ी–यात्रा एक अन्य सुन्दर घाटी में प्रवेश करती है। रास्ते का अधिकांश भाग सैकड़ों वर्षों की जमी बर्फ़ के ऊपर से गुज़रता है।

नीचे 'अमरगंगा' नामक पहाड़ी नाले की घरघराहट निरंतर सुनाई पड़ती है। आगे चलकर अमरगंगा' नामक पहाड़ी नाले की घरघराहट निरंतर सुनाई पड़ती है। आगे चलकर अमरगंगा प्रत्यक्ष दिखाई देती है। इसमें स्नान करके, किनारे पर फैली हुई धौली मिट्टी की विभूति शरीर पर मलकर यात्री गुफ़ा की ओर चल पड़ते हैं। स्वामी अमरनाथ की गुफ़ा अमरगंगा से लगभग 35 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। गुफ़ा के द्वार पर सैकड़ों दर्शनार्थी पंक्तियों में खड़े 'जयकारा – हरहर महादेव' का उद्घोष करते रहते हैं। सारी घाटी गूँज उठती है। गुफ़ा में जगह–जगह जल की बूँदें टपकती दिखाई देती हैं और भक्तजन इसे अमृत समझकर ग्रहण करते है। गुफ़ा के भीतरी छोर पर लगभग डेढ़ मीटर ऊँचा और लगभग इतने ही घेरे का हिमलिंग बनता है। दो अन्य स्थानों पर हिमखंड दिखाई देते हैं जिन्हें पार्वती और गणेश के रूप में पूजा जाता है। उधर अमर कबूतरों का जोड़ा घोंसले से निकलकर पंत्रा फड़फड़ाते हुए चारों ओर उड़ता दिखाई देता है। भक्तजन सामूहिक स्वर मे बोल उठते हैं – "दर्शन हो गए! दर्शन हो गए!!" तालियों की घड़घड़ाहट से सारा वनप्रदेश गूँज उठता है। श्रद्धालु सामूहिक भजन–कीर्तन में भाग लेकर अलौकिक आनन्द प्राप्त करते हैं। अर्घ्य–पुष्प और चढ़ावे चढ़ाकर यात्री कृतकृत्य होकर अपने–अपने घरों की ओर चल पड़ते हैं। हमारे देश में श्रावणपूर्णिमा के इस धार्मिक त्यौहार के दिन रक्षाबंधन का उत्सव भी बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।

– 'विभागीय'

प्रश्न अभ्यास

बोध और विचार

1. स्वामी अमरनाथ की गुफ़ा श्रीनगर से कितनी दूरी पर स्थित है ?
2. अमरनाथ की गुफ़ा में किस चीज़ का शिवलिंग बनता है ?
3. अमरनाथ की यात्रा श्रीनगर में कहाँ से आरंभ होती है ?
4. छड़ीयात्रा की अगुआई कौन करता है ?
5. पहलगाम–घाटी में कौन सी पर्वतीय–नदी बहती है ?
6. पहलगाम के सौंदर्य बारे में पाँच वाक्य लिखें।
7. स्वामी अमरनाथ यात्रामार्ग के सबसे ऊँचे स्थल का नाम लिखें।
8. पौराणिक कथा के अनुसार 'पंचतरणी' की पाँच नदियों का संबंध किन पाँच धाराओं से माना गया है।
9. अमरनाथ की गुफ़ा में शिवलिंग के अतिरिक्त और कितने हिमखंड दिखते हैं और उन्हें किस रूप में पूजा जाता है ?

भाषा–अध्ययन

1. नीचे दिए गए शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करें :

   हिमाच्छादित, विश्वप्रसिद्ध, महत्त्वपूर्ण, उद्घोष, तीर्थस्थान।

2. 'घंरघराना' और 'हरहराना' शब्दों में नादसौंदर्य है अर्थात् ध्वनि के अनुसरण पर इनका निर्माण हुआ है। ऐसे ही तीन और शब्द लिखें।

योग्यता–विस्तार

1. किसी पर्वतीय–यात्रा का संक्षिप्त वर्णन लिखें।

हिमालय और हम

गिरिराज हिमालय से भारत का कुछ ऐसा ही नाता है

(1)

इतनी ऊँची इसकी चोटी कि सकल धरती का ताल यही
पर्वत–पहाड़ से भरी धरा पर केवल पर्वतराज यही
अंबर में सिर, पाताल चरन
मन इसका गंगा का बचपन
तन वरन–वरन, मुख निरावरन
इसकी छाया में जो भी है, वह मस्तक नहीं झुकाता है
गिरिराज हिमालय से भारत का कुछ ऐसा ही नाता है

(2)

अरुणोदय की पहली लाली इसको ही चूम निखर जाती
फिर संध्या की अंतिम लाली इस पर ही झूम बिखर जाती
इन शिखरों की माया ऐसी
जैसा प्रभात, संध्या वैसी
अमरों को फिर चिन्ता कैसी
इस धरती का हर लाल खुशी से उदय–अस्त अपनाता है
गिरिराज हिमालय से भारत का कुछ ऐसा ही नाता है

(3)

हर संध्या को इसकी छाया सागर–सी लंबी होती है
हर सुबह वही फिर गंगा की चादर–सी लंबी होती है।

इसकी छाया में रंग गहरा
है देश हरा, प्रदेश हरा
हर मौसम है, संदेश–भरा
इसका पद–तल छूने वाला वेदों की गाथा गाता है
गिरिराज हिमालय से भारत का कुछ ऐसा ही नाता है

(4)

जैसा यह अटल, अडिग–अविचल, वैसे ही हैं भारतवासी
है अमर हिमालय धरती पर, तो भारतवासी अविनाशी
कोई क्या हमको ललकारे
हम कभी न हिंसा से हारे
दु:ख देकर हमको क्या मारे
गंगा का जल जो भी पी ले, वह दु:ख में भी मुसकाता है
गिरिराज हिमालय से भारत का कुछ ऐसा ही नाता है

(5)

टकराते हैं इससे बादल, तो खुद पानी हो जाते हैं
तुफान चले आते हैं तो, ठोकर खाकर सो जाते हैं
जब–जब जनता को विपदा दी
तब–तब निकले लाखों गांधी
तलवारों–सी टूटी आँधी
इसकी परछाई में तूफान, चिरागों से शरमाता है
गिरिराज, हिमालय से भारत का कुछ ऐसा ही नाता है

– गोपाल सिंह 'नेपाली'

प्रश्न–अभ्यास

बोध और सराहना

1. प्रभात और संध्या के समय हिमालय की शोभा कैसी हो जाती है ? निम्नांकित में से सही विकल्प पर निशान लगाएं :–

(क) धूमिल (ख) हरा–भरा (ग) चाँदी–सी सफेद

(घ) सोने–सी लाल (ङ) प्रभात और संध्या का जैसा रूप होता है वैसा।

2. कविता के आधार पर हिमालय की विशेषताओं का वर्णन करें।

3. हिमालय के मन को गंगा का बचपन क्यों कहा गया है ?

4. हिमालय की किस विशेषता से भारतवासी सुख–दुःख तथा हानि–लाभ में एक समान रहने की प्रेरणा पाते हैं।

5. हिमालय में तूफानों से टकराने की अद्भुत क्षमता है। कविता का यह भाव जिन पंक्तियों से प्रकट होता है, उन्हें लिखें।

6. हिमालय के साथ भारतीयों के किन संबंधों का कवि ने वर्णन किया है ?

7. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट करें :–

(क) अंबर में सिर, पाताल चरन
मन इसका गंगा का बचपन
तन वरन–वरन, मुख निरावरण।

(ख) तूफान चले आते हैं तो, ठोकर खाकर सो जाते है।

योग्यता–विस्तार

1. अपने अध्यापक की सहायता से हिमालय के भौतिक और सांस्कृतिक महत्त्व की जानकारी प्राप्त करें।

2. दिनकर की 'हिमालय' और प्रसाद की 'हिमालय के आँगन में' कविताओं का कक्षा में सस्वर पाठ करें।